हक़ीक़तुल महदी

(महदी की वास्तविकता)

Haqeeqatul Mahdi

लेखक
हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद, क़ादियानी
मसीह मौऊद व महदी मा'हूद अलैहिस्सलाम

हक़ीक़तुल महदी

(महदी की वास्तविकता)

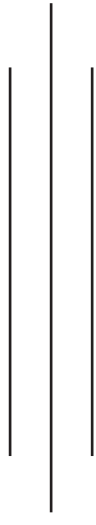

लेखक

हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी

मसीह मौऊद-व-महदी मा'हूद अलैहिस्सलाम

नाम पुस्तक	: हक़ीक़तुल महदी (महदी की वास्तविकता)
लेखक	: हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी मसीह मौऊद व महदी माहूद अलैहिस्सलाम
अनुवादक	: डा अन्सार अहमद तथा फ़रहत अहमद आचार्य
टाइप, सैटिंग	: नईम उल हक़ कुरैशी मुरब्बी सिलसिला
संस्करण	: प्रथम संस्करण (हिन्दी) सितम्बर 2020 ई०
संख्या	: 500
प्रकाशक	: नज़ारत नश्र-व-इशाअत, क़ादियान, 143516 ज़िला-गुरदासपुर (पंजाब)
मुद्रक	: फ़ज़्ले उमर प्रिंटिंग प्रेस, क़ादियान, 143516 ज़िला-गुरदासपुर (पंजाब)

Name of book	: Haqeeqatul Mahdi
Author	: Hazrat Mirza Ghulam Ahmad Qadiani Masih Mou'ud W Mahdi Mahood Alaihissalam
Translator	: Dr Ansar Ahmad & Farhat Ahmad Acharya
Type Setting	: Naeem Ul Haque Qureshi Murabbi Silsila
Edition	: 1st Edition (Hindi) September 2020
Quantity	: 500
Publisher	: Nazarat Nashr-o-Isha'at, Qadian, 143516 Distt. Gurdaspur, (Punjab)
Printed at	: Fazl-e-Umar Printing Press, Qadian 143516 Distt. Gurdaspur (Punjab)

प्रकाशक की ओर से

हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी मसीह मौऊद व महदी मा'हूद अलैहिस्सलाम द्वारा लिखित पुस्तक "हक़ीक़तुल महदी (महदी की वास्तविकता)" का यह हिन्दी अनुवाद आदरणीय डॉ० अन्सार अहमद और फ़रहत अहमद आचार्य ने किया है। तत्पश्चात आदरणीय शेख़ मुजाहिद अहमद शास्त्री (सदर रिव्यू कमेटी), आदरणीय फ़रहत अहमद आचार्य (इंचार्ज हिन्दी डेस्क), आदरणीय अली हसन एम. ए., आदरणीय नसीरुल हक़ आचार्य, आदरणीय इब्नुल मेहदी एम. ए. और आदरणीय सय्यद मुहियुद्दीन फ़रीद एम.ए. ने इसका रिव्यू किया है। अल्लाह तआला इन सब को उत्तम प्रतिफल प्रदान करे।

इस पुस्तक को हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ (जमाअत अहमदिया के वर्तमान ख़लीफ़ा) की अनुमति से हिन्दी प्रथम संस्करण के रूप में प्रकाशित किया जा रहा है।

विनीत

हाफ़िज़ मख़्दूम शरीफ़

नाज़िर नश्र व इशाअत क़ादियान

लेखक परिचय

हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी अलैहिस्सलाम

हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी मसीह मौऊद व महदी माहूद अलैहिस्सलाम का जन्म 1835 ई० में हिन्दुस्तान के एक कस्बे क़ादियान में हुआ। आप अपनी प्रारंभिक आयु से ही ख़ुदा की उपासना, दुआओं, पवित्र क़ुरआन और अन्य धार्मिक पुस्तकों के अध्ययन में व्यस्त रहते थे। इस्लाम जो कि उस समय चारों ओर से आक्रमणों का शिकार हो रहा था, उसकी दयनीय अवस्था को देख कर आप अलैहिस्सलाम को अत्यंत दुख होता था। इस्लाम की प्रतिरक्षा और फिर उसकी शिक्षाओं को अपने रूप में संसार के सम्मुख प्रस्तुत करने के लिए आपने 90 से अधिक पुस्तकें लिखीं और हज़ारों पत्र लिखे और बहुत से धार्मिक शास्त्रार्थ और मुनाज़रात किए। आपने बताया कि इस्लाम ही वह ज़िन्दा धर्म है जो मानवजाति का संबंध अपने वास्तविक सृष्टिकर्ता से पैदा कर सकता है और उसी के अनुसरण से मनुष्य व्यवहारिक तथा आध्यात्मिक उन्नति प्राप्त कर सकता है।

छोटी आयु से ही आप सच्चे स्वप्न, कश्फ़ और इल्हाम से सुशोभित हुए। 1889 ई० में आपने ख़ुदा तआला के आदेशानुसार बैअत[1] लेने का सिलसिला प्रारंभ किया और एक पवित्र जमाअत की नींव रखी। इल्हाम व कलाम का सिलसिला दिन प्रति दिन बढ़ता गया और आपने ख़ुदा के आदेशानुसार यह घोषणा की कि आप अंतिम युग के वही सुधारक हैं जिस की भविष्यवाणियाँ संसार के समस्त धर्मों में भिन्न-भिन्न नामों से उपस्थित हैं।

---

1 **बैअत**- किसी नबी, रसूल, अवतार या पीर के हाथ पर उसका मुरीद होना- अनुवादक

आपने यह भी दावा किया कि आप वही मसीह मौऊद व महदी माहूद हैं जिसके आने की भविष्यवाणी आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने की थी। जमाअत अहमदिया अब तक संसार के 200 से अधिक देशों में स्थापित हो चुकी है।

1908 ई० में जब आप का स्वर्गवास हुआ तो उसके पश्चात पवित्र क़ुरआन तथा आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की भविष्यवाणियों के अनुसार आपके आध्यात्मिक मिशन की पूर्णता हेतु खिलाफ़त का सिलसिला स्थापित हुआ। अत: इस समय हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ आप के पंचम ख़लीफ़ा और विश्वस्तरीय जमाअत अहमदिया के वर्तमान इमाम हैं।

पुस्तक परिचय

हक़ीक़तुल महदी (महदी की वास्तविकता)

एक समय से मौलवी मोहम्मद हुसैन बटालवी ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के विरुद्ध अंग्रेज़ी सरकार को कुधारणाग्रस्त करने की मुहिम तेज़ कर रखी थी। दलीलों के मुक़ाबले से असमर्थ रहने के कारण उसने गवर्नमेंट को आपके विरुद्ध उकसाना और इस उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए झूठी मुख्बिरियां करना अपना स्वभाव बना लिया था। उसने बार-बार अधिकारियों के पास जाकर आप पर यह झूठा आरोप लगाया कि आन्तरिक रूप से यह व्यक्ति बाग़ी है। और महदी सोडानी से भी अधिक ख़तरनाक है और गवर्नमेंट का कदापि शुभचिंतक नहीं है। उसे ढील देना और प्रचार करने की स्वतंत्रता प्रदान करना कदापि उचित नहीं। और एक पुस्तक अंग्रेज़ी भाषा में प्रकाशित करवाई जिसमें स्वयं को अंग्रेज़ी सरकार का शुभचिंतक दर्शाया और लिखा कि उसकी ग़ाज़ी महदी, जो फातिमा की संतान से होगा और धार्मिक युद्ध करेगा और समस्त काफिरों को मुसलमान बनाएगा, में आस्था नहीं है और न ही अंग्रेज़ी सरकार से जिहाद को वैध समझता है और वह उन सब रिवायतों को जो ग़ाज़ी फातमी महदी के बारे में वर्णन हुई हैं मजरूह, कमज़ोर और बनावटी समझता है और अमीर-ए-काबुल के पास भी पहुंचा और उससे मुलाक़ात के बाद उसने यह धमकी देना आरंभ कर दिया कि वहां चलो तो फिर जीवित वापस न आओगे।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने 'हक़ीक़तुल महदी' पुस्तक में बटालवी के ऐसे ही इल्ज़ामों और आरोपों का तर्कपूर्ण खंडन किया है

और उसकी महदी के बारे में आस्था को जो उसने अंग्रेज़ी सरकार के समक्ष वर्णन की थी, एक दोगला कार्य सिद्ध किया है। अत: आप ने इस पुस्तक के आरंभ में अहले हदीस संप्रदाय की, जिनका मौलवी मोहम्मद हुसैन बटालवी मुखिया था, महदी के बारे में आस्था वर्णन की है, और यह आस्था नवाब सिद्दीक हसन खान द्वारा लिखित पुस्तक 'हुजजुल किरामा' के हवाले से वर्णन की है, जिन्हें मोहम्मद हुसैन बटालवी इस सदी का मुजद्दिद स्वीकार कर चुका है। और उनके मुक़ाबले में महदी के बारे में अपनी तथा अपनी जमाअत की आस्था लिखी है और फिर गवर्नमेंट के समक्ष सच्चे तथा दोगले और शुभचिंतक तथा अशुभचिंतक को पहचानने के लिए एक परीक्षा का तरीका प्रस्तुत किया है कि हम दोनों पक्ष जिहाद और महदी के बारे में जो आस्था रखते हैं वह अरब अर्थात मक्का, मदीना आदि शहरों में और काबुल तथा ईरान आदि में प्रकाशित करने के लिए अरबी और फारसी में लिख कर और छाप कर अंग्रेज़ी सरकार के हवाले करें ताकि वह अपनी संतुष्टि के अनुसार उसे प्रकाशित करे। इस प्रकार जो व्यक्ति दोगला बर्ताव रखता है उसकी वास्तविकता प्रकट हो जाएगी। और वह कभी अपनी आस्था स्पष्टता पूर्वक नहीं लिखेगा क्योंकि मुसलमानों की सामान्य विचारधारा के विपरीत अपने विचारों को इस्लामी देशों में प्रकाशित करना उस बहादुर का काम है जिसका दिल और ज़बान एक ही हो।

अत: आप ने अपने वादे के अनुसार अरबी भाषा में अपनी आस्थाएँ लिखकर और उस का फारसी में अनुवाद करके इस पुस्तक के अंत में लगा दिए परंतु दोगली कार्रवाई करने वाले को ऐसा करने का साहस न हुआ। और यह पुस्तक आपने 21 फरवरी 1899 ई० को प्रकाशित कर दी।

विनीत

जलालुद्दीन

महदी से सम्बंधित आस्थाएं

यह आवश्यक है कि मैं सम्माननीय अंग्रेज़ सरकार पर प्रकट करूँ कि महदी मा'हूद के बारे में वहाबी फ़िर्क़े की क्या आस्था है जो स्वयं को अहले हदीस का नाम देते हैं और मौलवी अबू सईद मुहम्मद हुसैन बटालवी स्वयं को जिनका मुखिया समझता है और इस बारे में मेरी तथा मेरी जमाअत की क्या आस्था है। क्योंकि इस समस्त मतभेद तथा परस्पर शत्रुता की जड़ यही है कि मैं ऐसे महदी को नहीं मानता इसलिए मैं उन लोगों की दृष्टि में काफ़िर हूँ और मेरी दृष्टि में ये लोग ग़लती पर हैं। अत: मैं नीचे अपनी आस्था की तुलना में उन लोगों की आस्था का उल्लेख करता हूँ जो ये महदी के बारे में रखते हैं। यद्यपि अहले हदीस की यह आस्था जो महदी के संबंध में है उनकी सैकड़ों पत्रिकाओं एवं पुस्तकों में पाई जाती है परन्तु मैं उचित समझता हूँ कि नवाब सिद्दीक हसन खान की पुस्तकों में से इस आस्था का कुछ हाल वर्णन करूँ। क्योंकि मौलवी मुहम्मद हुसैन जो उनका मुखिया है, सिद्दीक़ हसन खान को इस सदी का मुजद्दिद मान चुका है (देखो इशाअतुस्सुन्न:) और उसकी पुस्तकों का पालन एक मुजद्दिद के निर्देशों की हैसियत से प्रत्येक अहले हदीस के लिए अनिवार्य समझता है और वह यह है:-

हमारे विरोधी मौलवियों की आस्था महदी के बारे में

नवाब सिद्दीक़ हसन ख़ान अपनी पुस्तक हुजजुलकिराम: के पृष्ठ-373 में तथा उसका बेटा सय्यिद नूरुल हसन ख़ान अपनी पुस्तक 'इक़्तिराबुस्साअत' के पृष्ठ-64 में महदी के बारे में अहले हदीस की आस्था को इस प्रकार से वर्णन करते हैं, जिसका सारांश यह है कि "महदी प्रकट होते ही इतने ईसाइयों को क़त्ल करेगा कि जो उनमें से शेष रह जाएंगे उनको शासन और बादशाहत का साहस नहीं रहेगा। और उनके मस्तिष्क से रियासत की गंध निकल जाएगी और अपमानित होकर भाग जाएंगे।"

फिर इसी हुजजुलकिराम: पृष्ठ-374 में पंक्ति 8 में लिखता है कि "इस विजय के बाद महदी हिन्दुस्तान पर चढ़ाई करेगा और हिन्दुस्तान पर विजय प्राप्त कर लेगा तथा हिन्दुस्तान के बादशाह

मेरी और मेरी जमाअत की आस्था महदी के बारे में

महदी और मसीह मौऊद के बारे में जो मेरी और मेरी जमाअत की आस्था है वह यह है कि इस प्रकार की समस्त हदीसें जो महदी के आने के बारे में हैं हरगिज़ विश्वसनीय और भरोसा करने योग्य नहीं हैं। मेरे निकट उन पर तीन प्रकार की जिरह (बहस) होती है या यों कहो कि वे तीन प्रकार से बाहर नहीं।

(1) प्रथम - वे हदीसें जो गढ़ी हुई झूठी और ग़लत हैं और उनके रावी (वर्णन कर्ता) बेईमानी और झूठ से आरोपित हैं, और कोई धार्मिक मुसलमान उन पर विश्वास नहीं कर सकता।

(2) दूसरी वे हदीसें हैं जो कमज़ोर और जिरह (बहस) में बिगड़ी हुई हैं और परस्पर विरोधाभास तथा मतभेद के कारण विश्वास के स्थान से गिरी हुई हैं और हदीस के प्रसिद्ध इमामों ने

की गर्दन में रस्सी डालकर उसके सामने उपस्थित किया जाएगा और सरकार के समस्त ख़ज़ाने और बैंक लूट लेंगे।"

और फिर इसी की अधिक व्याख्या पुस्तक 'इक़्तिराबुस्साअत' के पृष्ठ-64 पर इस प्रकार की है जो कथित पृष्ठ-64 के तेरहवीं पंक्ति से अठारहवीं पंक्ति तक यह इबारत है - "हिन्दुस्तान के बादशाहों की गर्दन में रस्सी डालकर उनके अर्थात् महदी के सामने लाएंगे।" उनके ख़ज़ाने बैतुल मुक़द्दस की शोभा बढ़ाएंगे (फिर इसके बाद अपनी राय वर्णन करता है और इस राय के समर्थन में उसके अपने मुंह के शब्द ये हैं - "मैं कहता हूँ हिन्द में अब तो कोई बादशाह भी नहीं है। यही कुछ रईस हिन्दू या मुसलमान हैं और वे कुछ स्थायी हाकिम नहीं हैं बल्कि केवल नाम के हैं और विलायत के बादशाह यूरोपियन हैं। संभवत: इस समय तक अर्थात् महदी के युग तक या तो उनका बिल्कुल वर्णन ही नहीं किया या जिरह (बहस) और अविश्वसनीयता के साथ वर्णन किया है और रिवायत की पुष्टि नहीं की। अर्थात् रिवायत करने वालों की सच्चाई और ईमानदारी पर गवाही नहीं दी।

(3) तीसरी वे हदीसें हैं जो वास्तव में सही तो हैं और कई स्रोतों से उनके सही होने का पता मिलता है, परन्तु या तो वे किसी पहले युग में पूरी हो चुकी हैं और बहुत समय हुआ कि उन लड़ाइयों का अन्त हो चुका है और अब कोई प्रत्याशित हालत बाक़ी नहीं और या यह बात है कि उन में ज़ाहिरी ख़िलाफ़त और ज़ाहिरी लड़ाइयों का कुछ भी वर्णन नहीं, केवल एक महदी अर्थात् सन्मार्ग प्राप्त इन्सान के आने की ख़ुशख़बरी दी गई है और संकेतों से बल्कि स्पष्ट शब्दों में भी वर्णन किया गया है कि उस की ज़ाहिरी बादशाहत और ख़िलाफ़त नहीं होगी और न वह लड़ेगा और न

यहाँ के यही हाकिम रहेंगे। इन्हीं को उनके अर्थात् महदी के सामने गिरफ़्तार करके ले जाएंगे।"

और ऊपर यही व्यक्ति लिख चुका है कि "गर्दन में रस्सी डालकर महदी के सामने उपस्थित करेंगे।"

और हुजजुलकिराम: में लिखा है कि - वह युग निकट है और संभवत: चौदहवीं शताब्दी हिजरी में यह सब कुछ हो जायेगा। और फिर 'इक़्तिराबुस्साअत' के पृष्ठ-65 में लिखा है कि - "महदी ईसाइयों की सलीब को तोड़ेगा अर्थात् उन के धर्म का नाम व निशान न छोड़ेगा।" और फिर हुजजुलकिराम: के पृष्ठ-381 में लिखा है कि - "ईसा आकाश से उतरकर महदी का वज़ीर बन जाएगा और बादशाह महदी होगा। "फिर हुजजुलकिराम: के पृष्ठ-381 में ख़ुशखबरी देता है कि - अब महदी का युग निकट आ गया है। फिर पृष्ठ-384 में लिखते हैं कि एक फ़िर्क़ा मुसलमानों का ख़ून बहाएगा और न उसकी कोई फ़ौज होगी। और रूहानियत और हार्दिक ध्यान के ज़ोर से हृदयों में दोबारा ईमान क़ायम करेगा। जैसा कि हदीस لَا مَهْدِیَّ اِلَّا عِیْسٰی जो इब्ने माजा की पुस्तक में जो इसी नाम से प्रसिद्ध है और हाकिम की पुस्तक 'मुस्तदरिक' में अनस बिन मालिक से रिवायत की गई है और यह रिवायत मुहम्मद बिन खालिद जुन्दी ने अब्बान बिन सालिह से और अब्बान बिन सालिह ने हसन बस्री से और हसन बस्री ने अनस बिन मालिक से और अनस बिन मालिक ने जनाब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से की है। और इस हदीस के मायने ये हैं कि उस व्यक्ति के अतिरिक्त जो ईसा के स्वभाव और तबियत पर आएगा और कोई भी महदी नहीं आएगा। अर्थात् वही मसीह मौऊद होगा और वही महदी होगा जो हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की आदत और तबियत और शिक्षा के ढंग पर आएगा। अर्थात् बुराई का

जो इस बात को नहीं मानता कि महदी इस शान और आदेश अर्थात् ग़ाज़ी (धर्म योद्धा) और मुजाहिद होने के तौर पर आएगा वह फ़िर्क़ा ग़लती पर है क्योंकि इस निशान के साथ महदी का प्रकट होना सिहाह सित्त: से अर्थात् हदीस की छ: विश्वसनीय पुस्तकों से सिद्ध होता है। फिर हुजजुलकिराम: पृष्ठ-395 में नवाब सिद्दीक़ हसन ख़ान लिखता है कि महदी के प्रकट होने का समय अब बहुत निकट है। समस्त लक्षण प्रकट हो चुके हैं और इस्लाम बहुत कमज़ोर हो गया है।

और फिर हुजजुलकिराम: के पृष्ठ-424 में लिखता है कि - ईसा भी महदी की तरह तलवार के साथ इस्लाम फैलाएगा। दो ही बातें होंगी या क़त्ल और या इस्लाम। और पुस्तक "अह्वालुल आखिरत" के पृष्ठ 31 में भी लिखा है कि जो ईसाई ईमान नहीं लाएंगे वे सब क़त्ल कर दिए जाएंगे।

मुकाबला न करेगा और न लड़ेगा तथा पवित्र नमूना और आकाशीय चमत्कारों से हिदायत को फैलाएगा। इसी हदीस के समर्थन में वह हदीस है जो इमाम बुखारी ने अपनी सहीह बुखारी में लिखी है जिसके शब्द ये हैं कि يَضَعُ الْحَرْبَ अर्थात् वह महदी जिसका दूसरा नाम मसीह मौऊद है धार्मिक लड़ाइयों को बिल्कुल स्थगित कर देगा और उसका यह निर्देश होगा कि धर्म के लिए लड़ाई न करो। बल्कि धर्म को सच्चाई[1] के प्रकाशों और नैतिक[2] चमत्कारों तथा ख़ुदा[3] के सानिध्य (क़ुर्ब) के निशानों के द्वारा फैलाओ। अत: मैं सच-सच कहता हूँ कि जो व्यक्ति इस समय धर्म के लिए लड़ाई करता है या किसी लड़ने वाले का समर्थन करता है और प्रत्यक्ष या गुप्त तौर पर ऐसा मशवरा देता है या दिल में ऐसी इच्छाएं रखता है वह ख़ुदा और रसूल का अवज्ञाकारी है। उन की वसीयतों, सीमाओं और कर्त्तव्यों से बाहर चला गया है।

तो ये आस्थाएं मुहम्मद हुसैन और उसके इस गिरोह की हैं जिन को अब अहले हदीस के नाम से पुकारते हैं। आम मुसलमान उन को वहाबी कहते हैं। और मुहम्मद हुसैन स्वयं को उनका सरदार और वकील प्रकट करता है। और इन आस्थाओं का स्रोत ये लोग अपनी ग़लती से उन हदीसों को समझते हैं जो हदीसों की एक प्रसिद्ध पुस्तक में जिसका नाम मिश्कात है, उसके बाबुल मलाहम में वर्णन की गई हैं। अरबी में मलाहम बड़ी लड़ाइयों को कहते हैं। और ये लोग यह विचार करते हैं कि ये वे लड़ाईयाँ हैं जो महदी ईसाइयों इत्यादि के साथ करेगा। यह बाब किताब मज़ाहिर हक़ जो किताब मिश्कात की व्याख्या है उसकी जिल्द-4 पृष्ठ-331 से आरंभ होता है परन्तु अफ़सोस कि इन हदीसों के समझने में इन लोगों ने बड़ी ग़लती की है।

अतएव मुहम्मद हुसैन और

और मैं इस समय अपनी उपकारी सरकार को सूचना देता हूँ कि वह मसीह मौऊद ख़ुदा से सदमार्ग प्राप्त और मसीह अलैहिस्सलाम के शिष्टाचार पर चलने वाला **मैं ही हूँ**। प्रत्येक को चाहिए कि उन शिष्टाचारों के अनुसार मुझे परखे और अपने दिल से बुरे विचार निकाल दे। मेरी **बीस वर्ष की शिक्षा** जो 'बराहीन अहमदिया' से आरंभ होकर 'राज़े हक़ीक़त' तक पहुँच चुकी है, यदि ध्यानपूर्वक देखा जाए तो इस से बढ़कर मेरी आन्तरिक शुद्धता का और कोई गवाह नहीं। मैं अपने पास सबूत रखता हूँ कि मैंने उन पुस्तकों को अरब, रोम, सीरिया और काबुल इत्यादि देशों में फैला दिया है और इस बात से सर्वथा इन्कारी हूँ कि इस्लामी लड़ाइयों के लिए आकाश से मसीह उतरेगा तथा कोई व्यक्ति महदी के नाम से जो बनी फ़ातिमा से होगा, समय का बादशाह होगा और दोनों मिलकर ख़ून बहाना आरंभ कर देंगे। ख़ुदा ने मुझ पर प्रकट किया है कि ये बातें हरगिज़ सही नहीं है। बहुत समय

उसके अहले हदीस गिरोह आने वाले महदी के बारे में यही आस्था रखते हैं। और जैसा कि ये लोग ख़तरनाक और शान्ति भंग करने का भड़कने वाला तत्त्व अपने अन्दर रखते हैं इसके लिखने की आवश्यकता नहीं।

इनकी तुलना में दूसरे कॉलम में मेरी आस्थाएं हैं और मेरी जमाअत की। इति।

हुआ कि हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम मृत्यु पा चुके हैं। कश्मीर में मुहल्ला खानियार में आप का मज़ार (क़ब्र) मौजूद है। तो जैसा कि मसीह का आकाश से उतरना झूठा सिद्ध हुआ ऐसा ही किसी गाज़ी महदी का आना झूठ है। अब जो व्यक्ति सच्चाई का भूखा है वह इसे स्वीकार करे। इति।

लेखक

ख़ाकसार - **मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद**, क़ादियान

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

नहमदहू-व-नुसल्ली

رَبَّنَا افْتَحْ بَيْنَنَا وَبَيْنَ قَوْمِنَا بِالْحَقِّ
وَاَنْتَ خَيْرُ الْفٰتِحِيْنَ (अल आराफ़ - 90)

اے قدیر و خالق ارض وسما اے رحیم و مہربان و رہنما

अनुवाद :- हे शक्तिमान और आकाश-पृथ्वी के पैदा करने वाले हे मेहरबान और मार्ग दिखाने वाले,

اے کہ میداری تو بر دلہا نظر اے کہ از تو نیست چیزے مستتر

अनुवाद :- हे वह जो दिलों पर नज़र रखता है, हे वह कि तुझ से कोई चीज़ छुपी हुई नहीं

گر توے بینی مرا پُر فسق و شر گر تو دید استی کہ ہستم بدگہر

अनुवाद :- यदि तू मुझे नाफ़रमानी और शरारत से भरा हुआ देखता है और यदि तू ने देख लिया है कि मैं अकुलीन हूँ,

پارہ پارہ کن منِ بدکار را شاد کن، ایں زمرۂ اغیار را

अनुवाद :- तो मुझ दुराचारी को टुकड़े-टुकड़े कर डाल और मेरे उन दुश्मनों के गिरोह को प्रसन्न कर दे।

بر دل شاں ابرِ رحمت ہابہار ہر مراد شان بفضل خود بر آر

अनुवाद :- उन के दिलों पर अपनी रहमत का बादल बरसा और अपने फज़्ल (कृपा) से उनकी हर मनोकामना पूरी कर।

آتش افشاں، بر درودیوارِ من دشمنم باش و تبہ کن کارِ من

अनुवाद :- मेरे दर-व-दीवार पर आग बरसा, मेरा दुश्मन हो जा और मेरा कारोबार नष्ट कर दे।

درمرا از بندگانت یافتی قبلۂ من آستانت یافتی

अनुवाद :- परन्तु यदि तूने मुझे अपना आज्ञाकारी पाया है और अपने दरबार को मेरा अभीष्ट क़िब्ल: पाया है।

در دل مَن آں محبت دیدۂ کز جہاں آں راز را پوشیدۂ

अनुवाद :- और मेरे दिल में वह प्रेम देखा है जिसका भेद तूने दुनिया से गुप्त रखा है,

بامن از روئے محبت کار کن اند کے افشاء آں اسرار کن

अनुवाद :- तो प्रेम की दृष्टि से मुझ से व्यवहार कर और उन रहस्यों को थोड़ा सा प्रकट कर दे।

اے کہ آئی سوئے ہر جویندۂ واقفی از سوزِ ہر سوزندۂ

अनुवाद :- हे वह कि तू हर जिज्ञासु के पास आता है और हर जलने वाले की जलन से परिचित है।

زاں تعلق ہا کہ با تو داشتم زاں محبت ہا کہ در دل کاشتم

अनुवाद :- तू उस संबंध के कारण जो मैं तुझ से रखता हूँ और उस प्रेम के कारण जो मैंने अपने दिल में बोया है,

خود بروں آ از پئے ابرائیِ من اے تو کہف و ملجاء و ماوائے من

अनुवाद :- तू स्वयं मेरी बरीयत के लिए बाहर निकल। तू ही मेरा घेरा और शरण-स्थल तथा ठिकाना है।

آتشے کاندر دلم افروختی وزدمِ آں غیر خود را سوختی

अनुवाद :- वह आग जो तूने मेरे दिल में रोशन की है और उसके शोलों से तूने अपने ग़ैर को जला दिया है।

ہم ازاں آتش رُخِ من بر فروز ویں شبِ تارم مبدّل کن بروز

अनुवाद :- उसी आग से मेरे चेहरे को भी रोशन कर दे और मेरी इस अँधेरी रात को दिन से बदल दे।

چشم بکشا ایں جہانِ کور را اے شدید البطش بنازور را

अनुवाद :- इस अंधे संसार की आँखें खोल और हे भूल-चूक पर रियायत न करने वाले ख़ुदा तू अपना ज़ोर दिखा।

زِ آسماں نور نشانِ خود نما یک گُلے از بوستانِ خود نما

अनुवाद :- आसमान से अपने निशान प्रकट कर और अपने बाग़ में से एक फूल दिखा।

ایں جہان بینم پُر از فسق و فساد غافلاں رانیست قتِ موت یاد

अनुवाद :- मैं इस संसार को दुराचार और पापों से भरा हुआ देखता हूँ। लापरवाहों को मौत का समय याद नहीं रहा।

از حقائق غافل و بیگانہ اند ہمچو طفلاں مائلِ افسانہ اند

अनुवाद :- वे वास्तविकताओं से लापरवाह और अपरिचित हैं और बच्चों की तरह कहानियों के शौकीन हैं।

سرد شد دلہا ز مہرِ روئے دوست روئے دلہا تافتہ از کوئے دوست

अनुवाद :- उनके दिल ख़ुदा के प्रेम से ठण्डे हैं और दिलों के मुख ख़ुदा की ओर से फिर गए हैं।

سیل در جوش است و شب تار یک و تار از کرمہا آفتابے را بر آر

अनुवाद :- सैलाब (बाढ़) विकराल रूप में है और रात घोर अन्धकारमय, मेहरबानी कर के सूरज चढ़ा दे।

चूँकि हमेशा से समय की यही आदत है कि जब किसी क़ौम में कोई ऐसा फ़िर्क़ा पैदा होता है कि उस क़ौम की दृष्टि में उस फ़िर्क़े के सिद्धान्त और आस्थाएं उनके अपने सिद्धान्त एवं आस्थाओं के विरुद्ध होती हैं तो उस क़ौम के सरदार यह कोशिश करते हैं कि इस फ़िर्के को किसी प्रकार नष्ट कर दें और हमेशा यही कोशिश करते रहते हैं कि क़ौम के सामने तथा सरकार के सामने उनको बदनाम करें। तो यही व्यवहार इस देश के कुछ मौलवियों ने मुझ से किया है। जिन में से पक्का दुश्मन और विरोधी मौलवी मुहम्मद हुसैन बटालवी इशाअतुस्सुन्नः का एडीटर है। उस बेचारे ने मेरा अशुभ चाहने के लिए अपना आराम हराम कर दिया। बटाला से बनारस तक अपना लज्जाजनक फ़त्वा लेकर कुफ्र के बारे में मोहरें लगवाता फिरा। और फिर जब केवल ऐसी कार्रवाई पर उसकी तबियत ख़ुश न हुई तो सरकार तक वास्तविकता के विरुद्ध ये बातें पहुंचाता रहा कि यह व्यक्ति छुपा हुआ बाग़ी है और महदी सूडानी से भी अधिक ख़तरनाक है। हालाँकि स्वयं ही अपने इशाअतुस्सुन्नः में मेरे बारे में यह लेख प्रकाशित कर चुका था कि इस व्यक्ति के बारे में बग़ावत का विचार दिल में लाना अत्यन्त बेईमानी है और बार-बार लिख चुका था कि मैं अपनी व्यक्तिगत जानकारी से गवाही देता हूँ कि यह व्यक्ति और इसका पिता मिर्ज़ा ग़ुलाम मुर्तज़ा साहिब अंग्रेज़ी सरकार के शुभ चिन्तक और जान न्योछावर करने वाले हैं। अतः जब इस **बुद्धिमान सरकार** ने इस ईर्ष्यालु की बातों की ओर कुछ ध्यान न दिया तो फिर अपनी क़ौम को उकसाना आरंभ किया और मेरे बारे में यह फ़त्वा प्रकाशित किया कि इस व्यक्ति का क़त्ल करना सवाब (पुण्य) का काम है। तो इस फ़त्वे को देखकर अन्य कई मौलवियों ने भी क़त्ल का फ़त्वा दे दिया। अतएव निस्सन्देह यह सच है कि यदि ख़ुदा तआला अपने फज़्ल से ये सामान

पैदा न करता कि इस उच्चतम सरकार की छत्रछाया में मुझे शरण देता तो मालूम नहीं कि ऐसे ग़ाज़ी (धर्म योद्धा) मुजाहिद अब तक क्या कुछ न कर दिखाते। यह व्यक्ति बार-बार मुझे काबुल के अमीर की धमकी देता रहा है कि वहां चलो तो फिर जीवित नहीं आओगे। यह तो हमें मालूम था कि यह आदमी काबुल के अमीर के पास अवश्य गया था परन्तु यह भेद अब तक नहीं खुला कि अमीर ने इस आदमी को मेरे क़त्ल के बारे में क्यों और किस कारण से वादा दिया। परन्तु याद रहे कि मेरे सिद्धान्त कपट पूर्ण नहीं हैं। यदि इस आदमी ने अमीर को मेरे बारे में यह कह कर क्रोधित किया है कि यह व्यक्ति उस महदी और मसीह के आने से इन्कारी है जिसकी प्रतीक्षा भौतिक विचारधारा के लोग कर रहे हैं तो मुझे सच बात के वर्णन करने में काबुल के अमीर का क्या डर है। मैं खुले तौर पर कहता हूँ कि उस ग़ाज़ी महदी और ग़ाज़ी मसीह के आने का मैं इन्कारी हूँ। यद्यपि ये शब्द किसी असभ्यता पर चरितार्थ किए जाएँ, परन्तु ख़ुदा ने जो मुझ पर प्रकट किया मैं उसे छोड़ नहीं सकता। मैं इस बात को कहता हूँ कि रूहानी तौर पर इस्लाम की उन्नति होगी तथा अमन और मैत्रीयता से सच्चाई फैलेगी। परन्तु इस आदमी की हालत पर बहुत अफ़सोस है कि कई रंग बदलता है। मौलवियों को गुप्त तौर पर कुछ कहता है और अंग्रेज़ी सरकार को कुछ और। फिर काबुल के अमीर के पास उसको प्रसन्न करने के लिए उसकी इच्छानुसार आस्थाएं व्यक्त करता है। मैं विश्वास रखता हूँ कि इस आदमी ने काबुल में जाकर अपने अस्तित्त्व को आस्था की दृष्टि से अमीर के उद्देश्यों के अनुसार व्यक्त किया है। क्योंकि यदि काबुल का अमीर ऐसा ही व्यक्ति है जो अपनी विरोधी आस्था को पाकर तुरन्त क़त्ल कर देता है तो यह प्रश्न उठता है कि ऐसे अमीर से यह कैसे बचकर आ गया। क्या यह आदमी इक़रार

कर सकता है कि यह काबुल के अमीर का सहपंथी है।

रही मेरी आस्थाएं, तो जैसा कि वे वास्तव में सच्चे हैं इसी प्रकार वे प्रत्येक फ़ित्ने से पवित्र और मुबारक हैं। एक बुद्धिमान सोच सकता है कि हमारी ये आस्थाएं कि कोई महदी या मसीह ऐसा आने वाला नहीं है जो पृथ्वी को ख़ून से लाल कर देगा और बड़ी ख़ूबी उसकी यह होगी कि लोगों को ज़बरदस्ती मुसलमान बनाए। ये कैसी उत्तम और अच्छी आस्थाएं हैं जो सर्वथा अमन और सहनशीलता के सिद्धान्तों पर आधारित हैं जिनके कारण न किसी विरोधी को यह अवसर मिलता है कि इस्लाम पर किसी प्रकार की ज़बरदस्ती का आरोप लगाए और मानवजाति से अकारण दरिन्दगी का बर्ताव करना पड़ता है। और न नैतिक हालत पर कोई धब्बा लगता है और न ऐसी पवित्र आस्था के लोग किसी विपरीत धर्म वाली सरकार के अधीन कपटाचारियों जैसा जीवन व्यतीत कर सकते हैं। परन्तु वे आस्थाएं जो हमारी आस्थाओं की विरोधी हैं जिनके लिए ये लोग आशाएं लगाए बैठे हैं उनकी व्याख्या की आवश्यकता नहीं। हमारी बुद्धिमान सरकार को याद रखना चाहिए कि मुसलमानों के विभिन्न फ़िर्क़ों में से ख़तरनाक वह समूह हैं जिनकी आस्थाएं ख़तरनाक हैं। मुहम्मद हुसैन बटालवी का मुझे महदी सूडानी से समानता देना सरकार को कितना धोखा देना है। स्पष्ट है कि न मैं जिहाद का समर्थक और न ऐसे महदी को मानने वाला और न ऐसे किसी मसीह के आने की प्रतीक्षा करता हूँ जिसका काम जिहाद और ख़ून बहाना हो, तो फिर सूडानी को मुझ से क्या समानता और मुझे उस से क्या अनुकूलता। जहाँ तक मेरा विचार है मैं जानता हूँ कि महदी सूडानी की आस्था से इन लोगों की आस्थाएं बहुत समानता रखती हैं। यदि मुहम्मद हुसैन और उस के दस-बीस मित्र मौलिवियों के एक-दूसरे के सामने क़सम खिलाकर बयान लिए जाएँ तो

तुरन्त पता लग जाएगा कि महदी सूडानी की आस्थाओं से मेरी आस्थाएं मिलती हैं या इन लोगों की।

मुझे कोई आवश्यकता न थी कि मैं इन बातों का वर्णन करूँ। उच्चतम सरकार बहुत चतुर है वह किसी से धोखा नहीं खा सकती परन्तु चूँकि मुहम्मद हुसैन ने अनेकों बार मुझ पर यह आरोप लगाया है कि मानो महदी सूडानी से मेरी हालतें समान बल्कि उस से भी अधिक ख़तरनाक हैं। इसलिए आवश्यक था कि इस झूठ का मैं उत्तर देता। ख़ुदा तआला का धन्यवाद कि कपटाचारियों जैसी कारवाइयों से उसने मुझे सुरक्षित रखा है। यह नहीं कि मुहम्मद हुसैन की तरह अंग्रेज़ी सरकार को कुछ बताऊँ और अपने सजातीय मौलवियों पर कोई अन्य आस्थाएं व्यक्त करूँ। यह कितनी लज्जाजनक और कमीनी आदत है कि मुहम्मद हुसैन बटालवी ने दूसरे मौलवियों से उनके महदी के बारे में आस्थाओं से सहमति व्यक्त की। इसी प्रकार काबुल के अमीर को भी प्रसन्न किया और उस से बहुत सा रुपया इनाम पाया तथा सरकार के पास यह वर्णन किया कि मानो वह ऐसी आस्थाओं से विमुख और ऐसी हदीसों को सर्वथा ग़लत और बनावटी समझता है। क्या यह प्रशंसनीय आदत है? हरगिज़ नहीं। कपटाचारियों से न ख़ुदा तआला प्रसन्न हो सकता है और न कोई बुद्धिमान सरकार प्रसन्न हो सकती है। बाह्य और आन्तरिक तौर पर एक होना अत्युत्तम आदत है। सरकार सोच सकती है कि ये लोग मुझसे क्यों नाराज़ है और नाराज़ होने की असल जड़ क्या है। सरकार के लिए सर सय्यद अहमद खान के.सी.एस.आई. की गवाही पर्याप्त है जिसको वह अन्तिम समय में मेरे संबंध में प्रकाशित कर गए। बल्कि समस्त मुसलमानों को नसीहत दी कि इस व्यक्ति की कार्य पद्धति पर चलना चाहिए जो अंग्रेज़ी सरकार के बारे में उसके विचार हैं। कौन नेक दिल मनुष्य है जो इस बात पर सूचना

पाकर अफ़सोस नहीं करेगा कि मुहम्मद हुसैन ने बहुत ही कमीनेपन से मुसलमानों को मुझे कष्ट देने के लिए तैयार कर दिया। मैं अपने तौर पर रूहानी बातों की तरफ़ बुलाता था और कभी मैंने मुहम्मद हुसैन को संबोधित नहीं किया था, कि अचानक उसने स्वयं मेरे लिए फ़त्वा तैयार किया और यह प्रयास करना चाहा कि लोग मुझे काफ़िर और दज्जाल ठहराएँ। पहले वह फ़त्वा अपने उस्ताद नज़ीर हुसैन देहलवी के सामने प्रस्तुत किया। चूँकि कथित नज़ीर हुसैन उसी का सहपंथी और समतत्त्व है और ज्ञानेन्द्रियां (हवास) भी बुढ़ापे की हैं तथा स्वभाव से कम समझ मुल्लाओं की तरह बैर और कंजूसी बहुत है। इसीलिए तुरन्त अविलम्ब मेरे कुफ्र पर गवाही दी। फिर क्या था उसके समस्त गन्दगी खाने वाले शिष्यों ने कुफ्र का फ़त्वा दे दिया। खैर यह तो वह बात है कि मरने के बाद प्रत्येक व्यक्ति मालूम कर लेगा कि कौन काफ़िर तथा कौन मोमिन है। किन्तु यहाँ केवल यह व्यक्त करना अभीष्ट है कि मुहम्मद हुसैन ने अकारण सर्वथा दुश्मनी के कारण फ़त्वा तैयार किया और हिन्दुस्तान में जगह-जगह भ्रमण कर के उस पर सैकड़ों मुहरें लगवाईं कि यह व्यक्ति काफ़िर और दज्जाल है। फिर उस समय से आज तक अपमान, तिरस्कार तथा गालियाँ देने से नहीं रुका और गन्दी गालियों के निबंध अपने हाथ से लिखे तथा मुहम्मद बख़्श, जाफ़र ज़टल्ली लाहौरी और अबुलहसन तिब्बती के नाम पर छपवा दिए। और फिर अधिकतर निबंधों को नक़ल के तौर पर अपनी पत्रिकाओं में लिखता रहा। ये समस्त प्रमाणित बातें हैं केवल काल्पनिक बातें नहीं हैं। और फिर इस पर भी बस न की और मेरे क़त्ल का फ़त्वा दिया, अनेकों बार मुबाहला का निवेदन किया और फिर मुंह फेर लिया तथा मुझे बदनाम किया कि मुबाहला नहीं करते। यही कारण थे कि मैंने 21 नवम्बर 1898 ई० को मुबाहले का इश्तिहार

प्रकाशित किया। जिसके बाद मुहम्मद हुसैन ने एक छुरी खरीदी जिस से मुझे इस ढंग से बदनाम करना चाहता था कि मानो मैं उसको क़त्ल करना चाहता हूँ। परन्तु जिस व्यक्ति ने इस से पहले मेरे क़त्ल का फ़त्वा दिया उसका छुरी खरीदना किस बात पर दलालत करता है। सोचना चाहिए कि मैंने अपनी भविष्यवाणी के मायने स्पष्ट तौर पर इश्तिहार में लिख दिए थे कि इस से अभिप्राय किसी की मौत इत्यादि नहीं बल्कि अभिप्राय यह है कि जो व्यक्ति झूठा है वह उलेमा तथा न्यायवानों की दृष्टि में अपमानित होगा। और इस अपमान का क़ानून से कुछ संबंध न था। परन्तु फिर भी कुछ मतलबी लोगों ने मुझे क़ानून का निशाना बनाने के उद्देश्य से इस बात को अधिकारियों तक पहुँचाया। यदि दो-चार अरबी जानने वालों से उस इल्हाम के मायने क़सम लेकर पूछे जाते और सब से पहले कुछ अरबी जानने वाले लोगों का मेरे सामने इक़रार लिया जाता तो यह मुक़द्दमा एक क़दम भी न चल सकता, क्योंकि ऐसे अपमान को जो उलेमा के फ़त्वे पर आधारित है क़ानून से कुछ भी संबंध न था। परन्तु ऐसा न हुआ। और इसी कारण से बड़ी हानि हुई। हालाँकि 21 नवम्बर और 30 नवम्बर 1898 ई० के इश्तिहार में उसकी व्याख्या भी मौजूद थी। मुहम्मद हुसैन ने अपनी पुरानी आदतों के अनुसार आथम और लेखराम के बारे में जो भविष्यवाणी थी उस से इस प्रकार से लाभ प्राप्त करना चाहा कि मानो वह समस्त शोर और रक्तपात मेरे मशवरे और इशारे से हुआ था तथा ऐसी भविष्यवाणियाँ मेरा पुराना आचरण है परन्तु अफ़सोस कि किसी को अब तक यह विचार नहीं आया कि वे दोनों भविष्यवाणियाँ इन दोनों लोगों के बहुत आग्रह के बाद हुई थीं और उन्होंने स्वयं अपनी इच्छा से उन भविष्यवाणियों को मेरे प्रकाशित करने से पहले प्रकाशित किया था। जिसके सबूत पर्याप्त तौर पर मौजूद हैं। तो फिर मुझ पर कौन

सा आरोप था। हाँ भविष्यवाणियों के विषय के अनुसार इन दोनों ने मृत्यु पाकर भविष्यवाणियों को सच्चा कर दिया। एक अपनी मौत से मरा और दूसरा किसी के मारने से। अब्दुल्लाह आथम जो अपनी मौत से मरा था उसने भविष्यवाणी के समय में कभी प्रकट न किया कि उसके मारने के लिए कभी कोई आक्रमण हुआ। चूँकि भविष्यवाणी शर्त वाली थी, इसलिए उसने इस्लामी श्रेष्ठता का डर अपने दिल में पैदा कर के इतना लाभ प्राप्त कर लिया कि जब तक वह खामोश रहा जीवित रहा और जब उसने ईसाइयों के सिखाने से यह कहना आरंभ किया कि मैंने इस्लामी श्रेष्ठता से कुछ भय नहीं किया। तो इस झूठ बोलने के कारण ख़ुदा ने उसको शीघ्र उठा लिया ताकि भविष्यवाणी का पूरा होना लोगों पर प्रकट करे। जैसा कि मेरे इल्हाम में पहले से यही दर्ज था। अत: अब्दुल्लाह आथम के बारे में भविष्यवाणी दो प्रकार से पूरी हुई। प्रथम – इल्हामी शर्त के अनुसार इस्लामी श्रेष्ठता से भय करने और पन्द्रह महीने तक इस्लाम का तिरस्कार करने से ज़ुबान बन्द रखने के कारण दयालु ख़ुदा ने उसे छूट दी जैसा कि अज़ाब की भविष्यवाणियों में अल्लाह की सुन्नत (नियम) है। फिर पन्द्रह महीने अर्थात् भविष्यवाणी की समय सीमा गुज़रने के बाद उसके दिल में यह विचार पैदा हुआ कि उसने उस समय के कारण छूट और विलंब का लाभ नहीं उठाया बल्कि संयोग से ऐसा ही हो गया। तो इस विचार पर जब उसने आग्रह किया और कुछ झूठ भी बांधे और समझा कि मैं अब बच गया तो ख़ुदा तआला ने उस से अपनी अमान (सुरक्षा) को वापस ले लिया। और मेरे अन्तिम इश्तिहार से छ: महीने के अन्दर वह मर गया ताकि लोगों को मालूम हो कि उसने केवल शर्त से लाभ उठाया था। शर्त को तोड़ा और तुरन्त पकड़ा गया। अत: आथम में दो भविष्यवाणियाँ पूरी हुईं।

(1) शर्त से लाभ प्राप्त करने की।

(2) शर्त तोड़ने के बाद तुरन्त पकड़े जाने की।

और लेखराम की भविष्यवाणी में कोई शर्त न थी। इसलिए वह एक ही पहलू में पूरी हुई। कैसे अज्ञानी, अन्यायी, बेईमान वे लोग हैं जो कहते हैं कि आथम के बारे में भविष्यवाणी पूरी नहीं हुई। हम उनको इसके अतिरिक्त क्या कहें कि झूठों पर ख़ुदा की लानत।

यह भी याद रखने योग्य है कि कुछ कंजूस स्वभाव, दिल के अंधे एक-दो और भविष्यवाणियों पर भी ऐतराज़ करते हैं कि वे पूरी नहीं हुईं। परन्तु यह उनका सर्वथा झूठ है और सच और वास्तविक बात यही है कि मेरी ऐसी कोई भविष्यवाणी नहीं जो पूरी नहीं हो गयी। यदि किसी के दिल में सन्देह हो तो वह सीधी नीयत से हमारे पास आ जाए और मेरे सामने कोई ऐतराज़ करके यदि सन्तोषजनक और पर्याप्त उत्तर न सुने तो हम एक जुर्माने के योग्य ठहर सकते हैं। वास्तविकता यही है कि ऐसे लोग संकीर्णता से ऐतराज़ करते हैं न कि इन्साफ़ से। यदि ये लोग नबियों अलैहिस्सलाम के समय में होते तो उन पर भी ऐसे ही ऐतराज़ करते जो मुझ पर करते हैं। जो व्यक्ति आँखे रखता है उसे हम मार्ग दिखा सकते हैं परन्तु जो संकीर्णता और स्वार्थ तथा अहंकार से अन्धा हो गया हो उसे क्या दिखा सकते हैं। इस खाकसार के इल्हामों की मुबारक भविष्यवाणियाँ जो तीन हज़ार या इस से भी अधिक जन सामान्य के अमन की विरोधी नहीं पूरी हो चुकी हैं, सैकड़ों नेक दिल मनुष्य गवाह हैं, बहुत से लेख समय से पूर्व प्रकाशित हो चुके हैं। फिर भी यदि कोई संकीर्णता के मार्ग से अकारण सन्देह एवं ऐतराज़ प्रस्तुत करता है और सीधे तौर पर संगत में रह कर अनुभव नहीं करता और न अनुभवी लोगों से पूछता है और छल तथा बेईमानी के मार्ग से धोखा देने वाले ऐतराज़ प्रसिद्ध करता है

और बेईमानी तथा झूठ बोलने से नहीं रुकता वह उन इन्कारियों का वारिस है जो इस से पहले ख़ुदा के पवित्र नबियों के मुकाबले पर गुज़र चुके हैं। ख़ुदा अपने बन्दों को ऐसे षड़यन्त्र करने वाले लोगों के इल्ज़ामों से अपनी शरण में रखे। इस बात का क्या कारण है कि ये लोग चोरों की तरह दूर-दूर से ऐतराज़ करते हैं और पवित्र दिल लोगों की तरह सामने आकर ऐतराज़ नहीं करते और न उत्तर सुनना चाहते हैं। इसका यही कारण है कि ये लोग अपने दजल और बेईमानी से परिचित हैं और इनका दिल उनको हर समय बताता है कि यदि तुमने ऐसे व्यर्थ, असभ्यता और बेईमानी से भरे हुए ऐतराज़ सामने प्रस्तुत किए तो इस स्थिति में तुम्हारे दोषों पर से पर्दा उठ जाएगा और तुम्हारी धोखा देने वाली बातें अचानक समाप्त हो जाएँगी। तब उस समय शर्मिन्दगी, लज्जा और बदनामी रह जाएगी और ऐतराज़ का नामो निशान न रहेगा।

खूब याद रखना चाहिए कि मेरी भविष्यवाणियों में कोई बात ऐसी नहीं है जिसका उदाहरण पहले नबियों की भविष्यवाणियों में नहीं है। ये असभ्य और जाहिल लोग चूँकि धर्म की बारीक विद्याओं और मारिफ़तों से अपरिचित हैं। इसलिए इस से पहले कि ख़ुदा की आदत से परिचित हों, संकीर्णता के जोश से ऐतराज़ करने के लिए दौड़ते हैं और हमेशा पवित्र आयत * يَتَرَبَّصُ بِكُمُ الدَّوَائِرَ के अनुसार मेरी किसी परेशानी की प्रतीक्षा में हैं और عَلَيْهِمْ دَائِرَةُ السَّوْءِ के विषय से अपरिचित हैं। इन में से एक ने जफ़र-विद्या* का दावा करके मेरे बारे में लिखा है कि "जफ़र विद्या के द्वारा हमें मालूम हुआ है कि यह व्यक्ति झूठा है।" परन्तु ये मूर्ख नहीं समझते कि जफ़र वही झूठी और धिक्कृत विद्या है जिसके द्वारा शिया

* **अनुवाद**- वह तुम पर समय की मार पड़ने की प्रतीक्षा कर रहे हैं, समय की मार तो उन्हीं पर पड़ने वाली है (सूरः तौबा आयत- 98) अनुवादक

* **जफ़र विद्या**- एक ज्ञान जिससे परोक्ष की बातें बताई जाती हैं- अनुवादक

ये बातें निकाला करते हैं कि अबू बक्र और उमर नऊज़ुबिल्लाह अन्याय करने वाले और इस्लाम के दायरे से बाहर हैं। तो ऐसे झूठे ढंग का वही लोग विश्वास करेंगे जिन के दिल सच्चाई से अनुकूलता नहीं रखते। यदि इस प्रकार के हिसाब से कोई हिन्दू यह उत्तर दे कि केवल हिन्दू धर्म ही सच्चा है और शेष समस्त नबियों के धर्म झूठे हैं तो क्या वह धर्म झूठे हो जाएंगे? अफ़सोस ये लोग मुसलमान कहला कर किन कमीने विचारों में ग्रस्त हैं। हालाँकि कश्फ़ और स्वप्न भी प्रत्येक के एक समान नहीं होते। वह पूर्ण कश्फ़ जिन को पवित्र क़ुर्आन में ग़ैब की अभिव्यक्ति से चरितार्थ किया गया है जो दायरे के समान पूर्ण ज्ञान पर आधारित होता है वह प्रत्येक को प्रदान नहीं किया जाता, केवल ख़ुदा के चुने हुए लोगों को दिया जाता है और अपूर्ण ज्ञान वालों का कश्फ़ और इल्हाम अपूर्ण होता है जो अन्ततः उनको बहुत लज्जित करता हैं। ग़ैब की अभिव्यक्ति की वास्तविकता यह है कि जैसे कोई ऊंचे मकान पर चढ़कर आस-पास की वस्तुओं को देखता है तो निस्सन्देह उसे आसानी से प्रत्येक वस्तु दिखाई दे सकती है। परन्तु जो व्यक्ति नीचे के मकान से ऐसी वस्तुओं को देखना चाहता है तो बहुत सी वस्तुएं देखने से रह जाती हैं। और चुने हुए लोगों से ख़ुदा की यही आदत हैं कि उनकी दृष्टि को ऊंचे मकान तक ले जाता है। तब वे आसानी से हर वस्तु को देख सकते हैं और अंजाम की सूचना देते हैं और नीचे का आदमी अंजाम की सूचना नहीं दे सकता। इसीलिए बलअम ने हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को पहचानने में धोखा खाया और उसको उनका चुने जाने का वह उच्च पद मालूम न हो सका, जिस से डर कर वह सम्मान करता। हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के समय में भी यहूदियों में कई मुल्हम और स्वप्न देखने वाले थे। परन्तु चूँकि वे निचले स्थान में थे और ग़ैब की अभिव्यक्ति का पद उनको नहीं

दिया गया था। इसलिए वे हज़रत ईसा को नहीं पहचान सके और अपने जैसा बल्कि अपने से भी तुच्छ मनुष्य समझ लिया, और स्वप्न देखने वालों या इल्हाम प्राप्त लोगों के लिए यह एक ऐसी आज़मायश है कि यदि ख़ुदा की कृपा न हो तो अधिकतर लोग इसमें तबाह जाते हैं। और नीम मुल्ला ख़तरा-ए-ईमान का उदाहरण उन पर चरितार्थ हो जाता है। इसलिए निचले स्थान पर खड़े होने तथा ग़ैब की अभिव्यक्ति का अन्तर याद रखने योग्य है। बहुत से ऐसे अन्धे मुल्हम जिन के पैर गड्डे में से नहीं निकले हमारे बारे में ऐसी भविष्यवाणियाँ करते हैं कि जैसे अब हमारे सिलसिले का अन्त है। वे यदि तौबा: करें तो उनके लिए अच्छा है। उनको याद रखना चाहिए कि जीवन के बीच वाले हिस्सों में अंबिया अलैहिस्सलाम भी बलाओं से सुरक्षित नहीं रहे परन्तु अंजाम अच्छा हुआ। इसी प्रकार यदि हमें भी इस मध्यवर्ती पड़ाव में कोई शोक पहुंचे या कोई संकट सामने आए तो उसे ख़ुदा तआला का अंतिम आदेश समझना ग़लती है। ख़ुदा तआला का अनिवार्य वादा है कि वह हमारे सिलसिले में बरकत डालेगा और अपने इस बन्दे को बहुत बरकत देगा, यहाँ तक कि बादशाह इस बन्दे के कपड़ों से बरकत ढूंढेंगे। वह प्रत्येक परीक्षा तथा आने वाली आज़मायश का भी परिणाम अच्छा करेगा। और दुश्मनों के प्रत्येक इल्ज़ाम से अन्ततः बरी होना प्रकट कर देगा। इस बारे में उसके पवित्र इल्हाम इतने हुए हैं कि यदि सब लिखे जाएँ तो यह इश्तिहार एक पुस्तक हो जाएगी। इसलिए कुछ इल्हाम और एक स्वप्न बतौर नमूना नीचे लिखता हूँ और वह ये हैं :-

मुझे 21 रमज़ानुल मुबारक 1316 हिज्री जुम्अ: की रात को जिसमें मुझे रूहानियत का प्रसार महसूस होता था और मैं समझता था कि यह लैलतुल क़द्र है और आकाश से बहुत ही आराम और आहिस्तगी

से मींह बरस रहा था, एक स्वप्न हुआ। यह स्वप्न उनके लिए है जो हमारी श्रेष्ठ सरकार को हमेशा मेरे बारे में सन्देह में डालने के लिए प्रयास करते हैं। मैंने देखा कि किसी ने मुझ से निवेदन किया है कि यदि तेरा ख़ुदा सामर्थ्यवान ख़ुदा है तो तू उस से निवेदन कर कि यह पत्थर जो तेरे सिर पर है भैंस बन जाए। तब मैंने देखा कि एक भारी पत्थर मेरे सिर पर है जिसको कभी मैं पत्थर और कभी लकड़ी सोचता हूँ। तब मैंने यह मालूम करते ही उस पत्थर को पृथ्वी पर फेंक दिया। फिर इसके बाद मैंने ख़ुदा के दरबार में दुआ की कि इस पत्थर को भैंस बना दिया जाए और मैं इस दुआ में लीन हो गया। इसके बाद मैंने सिर उठा कर देखा तो क्या देखता हूँ कि वह पत्थर भैंस बन गया है। सबसे पहले मेरी नज़र उसकी आँखों पर पड़ी। उसकी बड़ी चमकदार एवं लम्बी आँखें थीं। तब मैं यह देख कर कि ख़ुदा ने पत्थर को जिसकी आँखें नहीं थीं, ऐसी सुन्दर भैंस बना दिया जिसकी ऐसी लम्बी और चमकदार आँखें हैं और सुन्दर और लाभप्रद प्राणी है। ख़ुदा की क़ुदरत को याद करके भावुक हो गया और अविलम्ब सज्दे में गिरा। मैं सज्दे में ऊंची आवाज़ से ख़ुदा तआला की महानता का इन शब्दों में इक़रार करता था, कि 'रब्बिलआला' -'रब्बिलआला' और आवाज़ इतनी ऊंची थी कि मैं सोचता हूँ कि वह आवाज़ दूर-दूर तक जाती थी। तब मैंने एक औरत से जो मेरे पास खड़ी थी जिस का नाम भानू था और शायद उसने इस दुआ का निवेदन किया था, यह कहा कि देख- हमारा ख़ुदा कैसा सामर्थ्यवान ख़ुदा है जिसने पत्थर को भैंस बनाकर आँखें दीं। और मैं उसे यह कह रहा था कि फिर अचानक ख़ुदा तआला की क़ुदरत की कल्पना से मेरे दिल ने जोश मारा और मेरा दिल उसकी प्रशंसा से पुनः भर गया। और फिर मैं पहले की तरह

आत्म-विस्मृति (वज्द) में आकर सज्दे में गिर पड़ा और हर समय मेरे दिल को यह कल्पना ख़ुदा तआला की चौखट पर यह कहते हुए गिराती थी कि हे मेरे उपास्य ख़ुदा! तेरी कैसी शान है, तेरे कैसे अदभुत कार्य हैं कि तूने एक निष्प्राण पत्थर को भैंस बना दिया। उसे लम्बी और चमकदार आँखें प्रदान कीं जिन से वह सब कुछ देखता है और न केवल यही बल्कि उसके दूध की भी आशा है। क़ुदरत की बातें हैं कि क्या था और क्या हो गया। मैं सज्दे में ही था कि आँख खुल गई। उस समय रात के लगभग चार बज चुके थे। इस पर ख़ुदा की भूरी-भूरी प्रशंसा। मैंने उसकी यह ताबीर (अर्थ) की है कि वे अन्यायी प्रकृति के विरोधी जो मेरे बारे में वस्तु-स्थिति के विरुद्ध और सर्वथा झूठी बातें बना कर सरकार तक पहुंचाते हैं वे सफ़ल नहीं होंगे। और जैसा कि ख़ुदा तआला ने स्वप्न में एक पत्थर को भैंस बना दिया तथा उसे लम्बी एवं चमकदार आँखें प्रदान कीं इसी प्रकार अन्ततः वह मेरे बारे में अधिकारियों को विवेक और आँखों की ज्योति प्रदान करेगा और वे मूल वास्तविकता तक पहुंच जाएंगे। **ये ख़ुदा के काम हैं और लोगों की नज़र में अजीब।**

यह धन्यवाद करने की बात है कि जिन अधिकारियों के अधीन हम किए गए हैं वे सच्चाई के भूखे और प्यासे हैं। यदि वे ग़लती करें तो नेक नीयत से ग़लती करते हैं तथा असल बात की खोज में लगे रहते हैं। इसके बाद जो मुझे इल्हाम हुए वे इसी स्वप्न के समर्थक हैं उन्हें भी नीचे लिखता हूँ, ताकि इस अंतिम समय में जब वे बातें पूरी हों तो लोगों के ईमान सुदृढ़ हों। परन्तु मैं नहीं जानता कि यह कब पूरा होगा और किस के हाथ पर पूरा होगा और उसका समय कौन सा है। मैं निस्सन्देह जानता हूँ कि यह धोखा जो हमेशा सरकार को

दिया जाता है क़ायम नहीं रहेगा और अन्त में यह होगा कि न्यायप्रिय शासक ईश्वरप्रदत्त प्रतिभा, विवेक और रौशन ज़मीरी से मेरी वास्तविक परिस्थितियों से परिचित हो जाएँगे। तब उसी के अनुसार जो मैंने देखा कि इन्सानी हाथों के माध्यम के बिना ख़ुदा की क़ुदरत ने एक पत्थर को एक सुन्दर सफ़ेद रंग की भैंस बना दिया और उसे अत्यन्त रौशन आँखें प्रदान कीं, मेरी असल सच्चाई अधिकारियों पर खुल जाएगी। वह समय और वह दिन ख़ुदा को मालूम है। परन्तु शीघ्र हो या देर से हो श्रेष्ठ सरकार पर मेरी सफ़ाई और मेरा नेक आचरण तथा सरकार के बारे में पूर्ण वफ़ादारी प्रत्येक व्यक्ति पर स्पष्ट हो जाएगी। वे बातें जो मेरे संबंध में फैलाई जाती हैं, ग़लत सिद्ध होंगीं। और इल्हाम जो इस स्वप्न के समर्थक हैं ये हैं :-

انّ اللّٰہ مع الذین اتقوا والذین ھم محسنون۔ انت مع الذین اتقوا۔ وانت معی یا ابراھیم۔ یاتیک نصرتی انّی انا الرحمٰن۔ یاارض ابلعی ماء ک غیض الماء وقضی الامر۔ سلام قولاً من ربّ رحیم۔ وامتازوا الیوم ایھاالمجرمون۔ انا تجالدنا فانقطع العدو واسبابہ۔ ویل لھم انّی یؤفکون۔ یعض الظالم علیٰ یدیہ ویوثَقُ۔ وان اللّٰہ مع الابرار۔ وانہ علیٰ نصرھم لقدیر۔ شاھت الوجوہ۔ انہ من اٰیۃ اللّٰہ وانہ فتح عظیم۔ انت اسمی الاعلیٰ۔ وانت منّی بمنزلۃ محبوبین۔ اخترتک لنفسی۔ قل انّی اُمِرْتُ وانا اوّل المؤمنین۔

अर्थात् ख़ुदा परहेज़गारों (संयमियों) के साथ है और उन लोगों के साथ है जो अहसान करते हैं, तू परहेज़गारों के साथ है। और हे इब्राहीम! तू मेरे साथ है मेरी सहायता तुझे पहुंचेगी। मैं रहमान (कृपालु) हूँ। हे

पृथ्वी! अपने पानी को अर्थात् वास्तविकता के विरुद्ध उपद्रव फैलाने वाली शिकायतों को जो पृथ्वी पर फैलाई गई हैं निगल जा। पानी सूख गया और बात का फैसला हुआ। तेरे लिए सलामती है यह दयालु प्रतिपालक ने फ़रमाया। हे ज़ालिमो! आज तुम अलग हो जाओ। हमने दुश्मन को पराजित किया और उसके समस्त सामान रोक दिए। उन पर कोलाहल है, कैसे झूठ गढ़ते हैं, ज़ालिम अपने हाथ काटेगा और अपनी शरारतों से रोका जाएगा और ख़ुदा नेक लोगों के साथ होगा, वह उनकी सहायता पर समर्थ है, मुंह बिगड़ेंगे, ख़ुदा का यह निशान है और यह महान विजय है। तू मेरा वह नाम है जो सब से बड़ा है और तू प्रियतमों के मुकाम पर है। मैंने तुझे अपने लिए चुना। तू कह मैं मामूर (आदेशित) हूँ और समस्त मोमिनों में से पहला हूँ।

महान सरकार के सच्चे शुभचिन्तक को पहचानने के लिए एक खुली-खुली कसौटी

(महान सरकार से सविनय निवेदन है कि इस लेख को ध्यानपूर्वक देखा जाए और निवेदन अनुसार दोनों पक्षों की परीक्षा ली जाए)

चूँकि मौलवी अबू सईद मुहम्मद हुसैन बटालवी एडीटर इशाअतुस्सुन्नः हमेशा गुप्त तौर पर प्रयास करता रहा है कि अंग्रेज़ी सरकार के दिल में मेरे संबंध में कुधारणा पैदा करे। मुझे मालूम हुआ है कि कई वर्षों से उसकी यही पद्धति है। इसलिए मैंने उचित समझा है कि मुहम्मद हुसैन और मेरे बारे में परखने का एक ऐसा उपाय किया जाए जिससे महान सरकार को सच्चा शुभ चिन्तक तथा छुपा हुआ अशुभ चिन्तक का ज्ञान हो जाए और भविष्य में हमारी बुद्धिमान

सरकार उसी मापदण्ड के अनुसार दोनों में से निष्कपट और कपट रखने वाले में अन्तर कर सके। तो वह उपाय मेरी समझ में यह है कि कुछ ऐसी आस्थाएं जो ग़लत-फ़हमी से इस्लामी आस्थाएं समझी गई हैं तथा ऐसी हैं कि उनको जो व्यक्ति अपनी आस्था बनाए वह सरकार के लिए ख़तरनाक है। उन आस्थाओं को इस प्रकार से निष्कपट और कपटाचारी व्यक्ति को पहचानने का उपकरण बनाया जाए कि अरब अर्थात् मक्का, मदीना इत्यादि अरब देश, तथा ईरान, काबुल इत्यादि में प्रकाशित करने के लिए अरबी और फ़ारसी भाषा में उन आस्थाओं को हम दोनों सदस्य लिख कर और छाप कर अंग्रेज़ी सरकार के हवाले करें ताकि वह अपनी संतुष्टि के अनुसार प्रकाशित कर दें। इस उपाय से जो व्यक्ति कपटाचारियों की तरह बर्ताव रखता है उसकी वास्तविकता खुल जाएगी क्योंकि वह उन आस्थाओं को सफाई के साथ हरगिज़ नहीं लिखेगा और उनको अभिव्यक्त करना उसे मौत मालूम होगी और उन आस्थाओं का प्रकाशित करना उनके लिए असंभव होगा। मक्का और मदीना में ऐसे इश्तिहार (विज्ञापन) भेजना तो उसके लिए मौत से अधिक बुरा होगा। तो यद्यपि इस बीस वर्ष की अवधि से ऐसी पुस्तकें अरबी और फ़ारसी में लिखकर अरब तथा फ़ारस के देशों में प्रकाशित कर रहा हूँ। परन्तु इस परीक्षा के उद्देश्य से अब भी इस इश्तिहार के अंतर्गत अरबी और फ़ारसी में एक भाषण अपनी शान्तिपूर्ण आस्थाओं के बारे में तथा महदी एवं मसीह की ग़लत रिवायतों, अंग्रेज़ी सरकार के संबंध में प्रकाशित करता हूँ। मेरे निकट यह आवश्यक है कि यदि मुहम्मद हुसैन जो अहले हदीस का सरदार कहलाता है, मेरी आस्थाओं की तरह और सुलह करने वाली आस्थाओं का पाबन्द है तो वह अपना इश्तिहार अरबी और फ़ारसी में छाप कर उसकी दो सौ प्रतियाँ मेरी ओर भेजे

ताकि मैं अपने माध्यम से मक्का और मदीना, सीरिया, रोम और काबुल इत्यादि में प्रसारित करूँ। इसी प्रकार मुझ से दो सौ प्रतियाँ मेरे अरबी और फ़ारसी इश्तिहार की ले ले ताकि वह स्वयं उनको प्रकाशित करे।

हमारी बुद्धिमान सरकार को भलीभाँति स्मरण रहे कि यों ही सरकार को प्रसन्न करने हेतु केवल नाम मात्र के लिए द्विअर्थी पुस्तक लिखना और फिर उसे अच्छी तरह प्रकाशित न करना यह निष्कपटता का ढंग नहीं है, यह और बात है, और सच्चे दिल से तथा पूरे जोश के साथ किसी ऐसी पुस्तक को जो मुसलामानों की सामान्य विचारधारा के विरुद्ध हो उसको वास्तव में दूसरे देशों तक भलीभाँति प्रकाशित कर देना यह और बात है और यह उस बहादुर का काम है जिसका दिल और ज़ुबान एक ही हों और जिसको ख़ुदा ने वास्तव में यही शिक्षा दी है। भला यदि यह व्यक्ति नेक नीयत है तो उसे अविलम्ब यह कार्रवाई करनी चाहिए, अन्यथा सरकार स्मरण रखे और भलीभाँति स्मरण रखे कि यदि उसने मेरे मुकाबले पर अरबी और फ़ारसी में ऐसी पुस्तक प्रकाशित न की तो फिर उस का कपट सिद्ध हो जाएगा। यह कार्य केवल कुछ घण्टों का है और बुरी नीयत के अतिरिक्त इस का कोई अवरोधक नहीं। हमारी महान सरकार स्मरण रखे कि यह व्यक्ति अत्यन्त कपट का व्यवहार रखता है और जिन का यह सरदार कहलाता है वे भी इसी आस्था और विचारधारा के लोग हैं।

अब मैं अपने वादे के अनुसार नीचे अरबी, फ़ारसी में विज्ञापन लिखता हूँ और सच्चाई को ग्रहण करने में ख़ुदा तआला के अतिरिक्त किसी से नहीं डरता और मैंने उत्तम क्रम और दोनों विज्ञापनों की पूर्ण समानता की दृष्टि से हित में समझा है कि असल विज्ञापन अरबी में लिखूं और फ़ारसी में उसका अनुवाद कर दूँ ताकि दोनों विज्ञापन अपने-

अपने तौर पर लिखे जाएँ तथा अरबी विज्ञापन जिसको प्रत्येक अन्य भाषा का आदमी आसानी के साथ पढ़ नहीं सकता उसका अनुवाद भी हो जाए।

अत: अब मैं दोनों विज्ञापन लिख कर इस पुस्तक के साथ सम्मिलित करता हूँ। ख़ुदा के समर्थन के साथ।

लेखक

ख़ाकसार **मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद, क़ादियान**

21 फ़रवरी 1899 ई०

بسم الله الرحمن الرحيم
نحمده و نصلى على رسوله الكريم
السلام عليكم يا إخوتى ورحمة الله وبركاته۔أمّا بعدفاسمعوا منى يا عباد الله الصالحين، ويا إخواننا من بلاد الروم والشام والارض المقدّسة مكة ومدينة التى هى دار هجرة سيدنا ونبيّنا خاتم النبيين، وفارس ومصر و كابل وغيرها من الارضين۔ رحمكم الله وأيّد كم، و كان معكم فى الدنيا ويوم الدين، وهدانا وهدا كم إلى حقٍّ مبين۔إنى أدعوكم إلى مراضى الله الرحيم، وأدعو إلى وصايا نبى الله الكريم، عليه ألف ألف صلاة من الله الكبير العظيم، وأُبشّركم بما

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

नहमदुहू व नुसल्ली अला रसूलिहिल करीम

हे मेरे भाइयो! अस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाहे व बरकातुहू। तत्पश्चात हे अल्लाह के नेक बन्दो! और रोम, सीरिया, और मक्का, मदीना की पवित्र भूमि, जो हमारे आक़ा और नबी ख़ातमुन्नबिय्यीन का दार-ए-हिजरत (प्रवास स्थल) है और इसी प्रकार फारस (ईरान) मिस्र, काबुल के अतिरिक्त दुनिया के अन्य देशों में रहने वाले मेरे भाइयो! मुझ से सुनो। अल्लाह तुम पर रहम करे और तुम्हारी सहायता करे और इस संसार में तथा परलोक में भी तुम्हारे साथ हो और हमारा भी और तुम्हारा भी सत्य की ओर मार्गदर्शन करे, मैं आप लोगों को रहीम ख़ुदा के मार्गों की ओर बुलाता हूँ और पवित्र रसूल, जिन पर महान ख़ुदा की हज़ार-हज़ार रहमतें हों, के आदेशों की ओर बुलाता हूँ। और इस देश में अत्यंत प्रेम करने वाले और क्षमावान ख़ुदा की कृपा

ظهر فی هٰذه الدیار بفضل الله الودود الغفّار، وأُبشّرکم بأیّام الله وتنفُّس صبح الصادقین، وأُبشّرکم برحمةٍ نزلت من ربنا وهُو أرحم الراحمین۔

یا عباد الله۔ إنه عزّوجلّ نظر إلی الارض فرأی أن الفتن فیها کثرت، والدیانة قلّت، والقلوب قست، والصدور ضاقت، وما من یوم یمضی ولا شهر ینقضی، إلّا تزید الفتن وتشتدّ المحن، ومُلئت الارض بأنواع البدّعات، وتُرکت السُنّة والقرآن وظهر الفساد فی النیّات، وغلبت علی القلوب حبّ الشهوات، وزالت من الجباه أنوارُ الحسنات، بل علی الوجوه مِن فساد القلوب

से जो कुछ प्रकट हुआ है उसकी ख़ुशख़बरी देता हूँ। मैं आप को अल्लाह तआला के दिनों के (आगमन) और सच्चों की सुबह प्रकट होने की तथा उस रहमत की ख़ुशख़बरी देता हूँ जो आसमान से उस सर्वाधिक दयालु रब्ब की ओर से उतरी है।

हे अल्लाह के बन्दो! उस महान ख़ुदा ने धरती की ओर देखा तो पाया कि उसमें उपद्रव बढ़ गए हैं और धर्म (का पालन) कम हो गया है, दिल सख्त और सीने तंग हो गए हैं और कोई दिन या महीना नहीं गुज़रता जिसमें उपद्रव न बढ़ते हों और मुसीबतें ज़ोर न पकड़ती हों। धरती विभिन्न प्रकार की बिदअतों (नए-नए आडम्बरों) से भर गई है और सुन्नत तथा क़ुरआन को छोड़ दिया गया है और निय्यतों में फ़साद ज़ाहिर हो गया है। दिलों पर वासनाओं का आधिपत्य हो गया है तथा (लोगों के) चेहरों से अच्छाइयों के तेज समाप्त हो गए हैं बल्कि दिलों के बिगड़ जाने के कारण उनके चेहरों पर नहूसत, रूखापन, कमज़ोरी, निराशा, बुज़दिली, नाकामी

سوادٌ وقُحول، وضُمّر وذبول، وجبن وإحجام، ووساوس وأوهام، وجهلوا كلما أُوتوا من النبي المصطفى، ونسوا وصايا القرآن وما قال خير الورىٰ۔ وبقي في أيديهم قشرٌ وأضاعوا لُبّ الإيمان، وأقبلوا على الدنيا وشهواتها وآثروا سُبُل الشيطان، وما تجدون أكثرهم إلّا فاسقين، مجترئين غير خائفين۔

وترون أكثر العلماء يقولون ولا يفعلون، والزهداء يُراؤون ولا يُخلصون، ولا يتبتّلون إلى الله ولا يتّقون۔ وترون عامة الناس تمايلوا على الدنيا وإلى الآخرة لا يلتفتون، ويتعامون ولا يُبصرون، وينومون مستريحين ولا يستيقظون۔

और शंकाए एवं भ्रम स्पष्ट हैं। और जो कुछ उन्हें नबी मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने दिया था उसे भुला बैठे हैं। क़ुरआन करीम के आदेशों और खैरुल वरा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की नसीहतों को भी भूल गए हैं। उनके हाथों में केवल छिलका रह गया है और ईमान के सार को उन्होंने खो दिया है। वे संसार तथा उसकी मोह-माया की ओर बड़ी तीव्रता से आकर्षित हुए और शैतान के मार्ग को प्राथमिकता दी है और तुम उन में से अधिकतर को दुराचारी और गुनाहों में आगे बढ़ने वाला और निर्भय पाओगे।

और तुम अधिकतर उलमा को देखोगे कि वे केवल मौखिक बातें तो करते हैं और काम कुछ भी नहीं और संयमी होने का दिखावा करते हैं तथा निष्ठा से काम नहीं लेते और न तो अल्लाह की ख़ातिर एकांतवास धारण करते हैं और न संयम। सामान्य लोगों को तुम देखोगे कि वे संसार की ओर आकर्षित हैं तथा परलोक की ओर ध्यान नहीं देते, जानबूझ कर अंधे बनते हैं और देखते नहीं और आराम से सोते रहते हैं और जागते नहीं।

وأهل الملل الاخرى يبذلون أموالهم وجهدهم لإشاعة الضلالات، وكذالك فسدت الارض من سوء الاعتقادات، وأخرجتْ أثقالَها من أنواع المكائد والخزعبيلات۔ فاقتضت العناية الإلهية أن يبعث عبدًا من عباده لتنوير القلوب المظلمة، ويُصلح على ٓ يديه موادَّ المفاسد الموجودة، فاختارنى فضلاً ورحمةً من عنده لهذه الخطّة العظيمة، وأعطانى حظًّا كثيرًا من المعارف الروحانية، وخفايا العلوم النبويّة، والدقائق الفرقانيّة، وسمّانى مسيحًا موعودًا لاحْيِ القلوب المائتة بقدرته الكاملة، وأجدّد أمر التوحيد وأشيّد مبانى الملّة۔ وإنى أنا آية

अन्य क़ौमों के लोग अपने माल और परिश्रम को गुमराही फैलाने में ख़र्च कर रहे हैं और इस प्रकार ग़लत आस्थाओं के परिणामस्वरुप धरती में उपद्रव पैदा हो चुका है और विभिन्न प्रकार के छल तथा अभद्रताएं धरती में फ़ैल गईं। अत: अल्लाह तआला ने चाहा कि वह अपने बन्दों में से एक बन्दे को अँधेरे दिलों को प्रकाशित करने के लिए भेजे और जो लोग बिगड़ चुके हैं उन्हें उसके हाथ से ठीक करे। अत: इस महान उद्देश्य के लिए उसने अपनी कृपा और दया से मेरा चयन किया और रूहानी मआरिफ (अध्यात्मज्ञान) से मुझे भरपूर हिस्सा प्रदान किया है और नबुव्वत के रहस्यमयी ज्ञान तथा पवित्र क़ुरआन के गूढ़ अर्थ मुझे समझाए और मेरा नाम मसीह मौऊद रखा ताकि मैं उसकी पूर्ण क़ुदरत से मुर्दा दिलों को जीवित करूँ तथा तौहीद (एकेश्वरवाद) को पुन: स्थापित करूं और शरीयत की इमारतों को बुलंद करूं। निस्सन्देह मैं अल्लाह तआला का वह निशान हूँ जिसे उसने सृष्टि पर कृपा करते हुए अपने समय पर प्रकट किया। अत: क्या तुम मुझे स्वीकार करोगे या

اللّٰه التی جلّاها لوقتها رُحمًا علی الخلیقة، فهل أنتم تقبلونی أو تردّون من أتاکم من الحضرة؟ وقد بلّغتُ ما أُمِرتُ فکونوا من الشاهدین۔

والذین کذّبونی فما کان تکذیبهم إلا من العمِیَّة، فإنهم ما تدبّروا دقائق أخبار خیر البریّة، علیه الصلاة والسلام من حضرة العزّة، و کانوا بادی الرأی مستعجلین۔ فأخذهم بخلٌ وعنادٌ نشأ من أهوائهم، واستولیٰ علیهم سیل شحنائهم فما کانوا مهتدین۔ وقالوا إن المسیح ینزل من السماء، وإنّ المهدی یخرج من بنی الزهراء، وأنّهما یتقلّدان الاسلحة ویحاربان الکَفَرة ویسفکان الدماء، ولا

उसका इंकार करोगे जो ख़ुदा की ओर से तुम्हारे पास आया है? अत: मैंने उस पैग़ाम को पहुंचा दिया जिसका मुझे आदेश दिया गया था और तुम इस बात पर गवाह रहना।

और जिन लोगों ने मुझे झुठलाया है तो उनका झुठलाना केवल उनके अंधेपन के कारण है। उन्होंने अल्लाह तआला की ओर से प्राप्त आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सूक्ष्म ख़बरों पर विचार नहीं किया और वे सरसरी सोच वाले एवं अपने मत को प्रकट करने में जल्दबाज़ी से काम लेने वाले हैं। उनको संकीर्ण विचारधारा और शत्रुता ने पकड़ लिया जो उनकी तामसिक इच्छाओं के कारण पैदा हुई थी। उनकी शत्रुता की बाढ़ उन पर हावी हो गई और वे हिदायत पाने वालों में से न हुए और वे कहते हैं कि मसीह इब्न मरियम आकाश से उतरेगा और महदी फ़ातिमतुज़्ज़हरा की संतान में से प्रकट होगा और वे दोनों हथियार से लैस हो कर काफ़िरों से जंग करेंगे और (धरती में) खून बहाएंगे और न मर्दों पर दया करेंगे न औरतों पर और किसी को नहीं

يرحمان الرجال ولا النساء ، ولا يتركان ولا يُدخلان السيوف فى أجفانهاحتى يكون الناس كلهم مسلمين۔

وقالوا إن المهدى يُفحِم الكَفَرة بالتعزيرات السياسية لا بالآيات السماوية، ولا يترك فى الارض بيتَ كافرٍ، ويضرب عنق كل مقيم ومسافر، إلا أن يكونوا مؤمنين۔ ويُحارب النصارىٰ و كلَّ مَن قبِل الملّة النصرانية، ويؤمّر بلادَ الهند وغيرها وينال الفتوح العظيمة، ويقتل وينهب ويغنم ويسبى الرجال والنسوة۔ والمسيح ينزل من السماء ليعاونه كالخدماء ، ولا يقبل الجزية ولا الفدية، ويُحبّ أن يقتل مَن فى الارض من الكفار أجمعين۔ و كذالك يطأ أفواجهما أرض

छोड़ेंगे और तलवारों को तब तक म्यानों में नहीं रखेंगे जब तक समस्त लोग मुसलमान न हो जाएँ।

और उन्होंने कहा कि महदी काफ़िरों का प्रशासनिक धाराओं से मुँह बंद करेगा न कि आसमानी निशानों के माध्यम से और धरती पर एक भी काफिर का घर शेष नहीं रहने देगा और प्रत्येक स्थाई निवासी तथा प्रवासी की गर्दन काटेगा यहाँ तक कि वे मोमिन बन जाएँ। और वह (महदी) ईसाइयों और प्रत्येक उस व्यक्ति से जो ईसाइयत को स्वीकार करेगा, जंग करेगा। और वह हिन्द तथा अन्य देशों का इरादा करेगा और बहुत बड़ी-बड़ी विजय प्राप्त करेगा और रक्तपात करेगा और उन्हें लूटेगा और माल-ए-ग़नीमत प्राप्त करेगा और वह मर्द तथा औरतों को क़ैदी बनाएगा। और मसीह आसमान से अवतरित होगा ताकि सेवकों के समान उस (अर्थात महदी) की सहायता करे और वह जज़िया और फिदिया स्वीकार नहीं करेगा और वह चाहेगा कि धरती पर जितने भी काफिर हैं उन सब को क़त्ल कर

الله سقّاكين غير راحمين۔ وقالوا هذه عقائد اتفق عليها أمم من العلماء ونقلها خلفُها من سلفِها، وحاضرُها من غابرِها، و كثيرٌ من الكبراء۔

وأما نحن يا عباد الله الرحيم، فما وجدنا هٰذه العقائد صحيحة صادقة، بل وجدناها سقطًا ورَدِيًّا لا من الرسول الكريم. وعلّمنى ربى أنه خطأٌ وما آتى رسولنا شيئا من مثل هذا التعليم و إنهم من الخاطئين۔ فالمذهب الذى أقامنا الله عليه هو مذهب حلم ورفق وتؤدة، لا قتلٍ وسبٍي وأخذ غنيمة، وهذا هو الحق الواجب فى زماننا و إنّا من المصيبين۔ فإن أمر الجهاد كآن فى بدو أيام الإسلام، و كان حفظ نفوس

दे और इस प्रकार उन दोनों की सेनाएँ अल्लाह की धरती को ख़ून बहाते हुए बेरहमी से रोंद डालेंगी। और ये लोग कहते हैं कि इन आस्थाओं से समस्त उलमा सहमत हैं और इस बात को बाद में आने वालों ने पहले वालों से और उपस्थितजनों ने भी बाद में आने वालों से नक़ल किया है और बहुत से बुज़ुर्गों ने भी (नक़ल किया है)।

हे रहीम ख़ुदा के बन्दो! जहाँ तक हमारा संबंध है तो हमने इन आस्थाओं को सही और सच्चा नहीं पाया बल्कि हमने उन्हें घटिया और रद्दी पाया है न ही उन्हें रसूल करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ओर से पाया। और मेरे रब्ब ने मुझे बताया है कि यह सारी बातें ग़लत हैं और हमारे रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने ऐसी कोई शिक्षा नहीं दी है और निस्सन्देह ये लोग ग़लती पर हैं। अल्लाह तआला ने हमें जिस धर्म पर कायम किया है वह सहानुभूति, नर्मी और सरलता का धर्म है न कि जंग का, न क़ैदी बनाने का और न माल समेटने का। और यही हमारे इस ज़माने में जानी-मानी

المسلمين موقوفًا على قتل القاتلين والانتقام، بما كانوا قليلين وكان الكفار غالبين كثيرين سفّاكين. وما أُمِر المؤمنون للحرب والقتال إلا بعد ما لبثوا عمرًا مظلومين مضروبين وذُبحوا كالمعز والجمال. وطال عليهم الجور والجفاء ، وتوالى الظلم والإيذاء ، حتى إذا اشتدّ الاعتداء وسُمع عويل المستضعَفين والبكاء ، فأُذِن للذين قتَل الكَفَرةُ إخوانهم والبنين، وقيل اقتلوا القاتلين والمعاونين، ولا تعتدوا فإن الله لا يُحبّ المعتدين. هُنَالك جاء أمر الجهاد، وما كان إكراهٌ فى الدين وما جَبرٌ على العباد، وما بُعِث نبيٌّ

सच्चाई है। और निस्सन्देह हम ही सही मार्ग पर हैं। अत: जिहाद का आदेश इस्लाम के प्रारंभिक दौर में था जबकि मुसलमानों के जीवन की सुरक्षा क़ातिलों को क़त्ल करने और उनसे बदला लेने पर आधारित थी क्योंकि मुसलमान संख्या में कम थे और काफ़िरों का प्रभुत्व था, वे संख्या में अधिक और रक्तपात करने वाले थे। मुसलमानों को एक लम्बे समय तक अत्याचार सहने और मारें खाने के पश्चात जंग की अनुमति मिली। वे भेड़ों तथा ऊंटों के समान ज़िबह किए गए और लम्बे ज़माने तक उन पर अत्याचार जारी रहा और उन पर एक के बाद एक अत्याचार हुए, ज़ुल्म और कष्ट दिए गए यहाँ तक कि शत्रुता सीमा से बढ़ गई और कमज़ोरों का रोना-पीटना तथा चीखो-पुकार सुनी गई। तब उन लोगों को अनुमति दी गई जिनके भाई और बेटों को काफ़िरों ने क़त्ल किया और उनसे कहा गया कि क़ातिलों को तथा उनके सहायकों को क़त्ल करो। परन्तु हद से न बढ़ना क्योंकि अल्लाह उन लोगों को पसंद नहीं करता जो हद से बढ़ते हैं। इस प्रकार (तलवार के) जिहाद का आदेश उतरा। धर्म के मामले में कोई ज़बरदस्ती नहीं थी और न

سفّاگًا بل جاؤوا كالعِهاد، وما قاتلوا إلا بعد الاذى الكثير والقتل والنهب والسبى من أيدى العدا وغلوّهم فى الفساد، فرُفعت هذه السُنّة برفع أسبابها فى هٰذه الاٴيام، وأُمرنا أن نُعدّ للكافرين كما يُعدّون لنا، ولا نرفع الحُسام قبل أن نُقتل بالحسام۔

وترون أن النصارى لا يقتلوننا فى أمر الدين، ولا قوم آخرون من البعيد والقرين۔ فهٰذه السيرة عارٌ للإسلام۔ أن نترك الرفق لقوم رفقوا۔ فأمعِنوا يا معشر الكرام ۔ وقد جاء فى صحيح البخارى أن المسيح الموعو ؔد يضع الحرب، يعنى لا

ही लोगों पर ज़बरदस्ती की गई और न ही नबी[स०] खून बहाने वाले बना कर भेजे गए थे अपितु शान्ति के दूत बन कर आए। परन्तु अत्यंत कष्ट सहने, क़त्ल किए जाने, लुटे जाने, शत्रुओं के हाथों क़ैदी बनाए जाने और उनके उपद्रव में पराकाष्ठा तक पहुँचने के बाद ही आप स० ने जंग की। परन्तु उन कारणों के अभाव में आजकल (तलवार के) जिहाद का रिवाज भी समाप्त कर दिया गया है और हमें आदेश दिया गया है कि हम काफ़िरों के मुक़ाबले के लिए वैसी ही तैयारी करें जैसी वे हमारे मुक़ाबले के लिए करते हैं। और यह कि हम हरगिज़ उस समय तक तलवार न उठाएं जब तक कि हमें तलवार से क़त्ल न किया जाए।

तुम देखते हो कि ईसाई तथा हमारे आस-पास की दूसरी क़ौमें धर्म के आधार पर हमें क़त्ल नहीं करतीं। अत: यह तरीक़ा इस्लाम के लिए लज्जाजनक है कि हम उन लोगों से नर्मी करना छोड़ दें, जो नर्मी करते हैं। हे सम्मानित लोगो! विचार करो। सही बुखारी में आया है कि मसीह मौऊद (धर्म के नाम पर लड़ी जाने वाली-अनुवादक) जंग को समाप्त कर

يستعمل الطعن ولا الضرب، فما كان لي أن أُخالف أمر النبي الكريم، عليه سلام الله الرؤوف الرحيم۔ وقد جرت عليه سُنّة نبينا خاتم النبيين، فأيّ أمرٍ أفضل منه يا معشر العاقلين؟ ويكفي لكم ما قال سيدنا خاتم النبيين، عليه صلوات الله والملائكة والصالحين من الناس أجمعين۔ ثم مع ذالك قد ثبت أن الاحاديث التي جاءت في المهدي الغازي المحارب من نسل الفاطمة الزهراء، كلها ضعيفة مجروحة، بل أكثرهَا موضوعة، ومِن قسم الافتراء ۔ وما وُثّق رُواتُها، وأُشكِلَ على المحدِّثين إثباتُها، ولاجل ذالك تركها الإمام البخاري والمسلم والإمام الهمام صاحب المؤطّا وجرحها كثير

देगा अर्थात वह तीर तथा तलवार का प्रयोग नहीं करेगा। अत: मेरे लिए यह संभव नहीं कि मैं नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के आदेश की अवमानना करूं। इस बारे में हमारे नबी ख़ातमुन्नबिय्यीन की यही सुन्नत है। हे बुद्धिमानों के समूह! कौन सा आदेश इससे श्रेष्ठ है? तुम्हारे लिए हमारे आक़ा ख़ातमुन्नबिय्यीन जिन पर अल्लाह की, फ़रिश्तों की और समस्त नेक लोगों की ओर से सलामती हो, का आदेश ही पर्याप्त है। इसके अतिरिक्त यह भी सिद्ध हो चुका है कि वे हदीसें जिनमें एक लड़ाकू महदी के फ़ातिमतुज़्ज़हरा की नस्ल से आने का वर्णन है, वे सब की सब कमज़ोर तथा मजरूह (बहस योग्य) हैं बल्कि अधिकतर तो झूठी गढ़ी गई हैं। उनके रावियों (वर्णन कर्ताओं) की विश्वसनीयता सिद्ध नहीं हो सकी। और मुहद्दिसीन के लिए उन हदीसों को सिद्ध करना कठिन हो गया है। इसी कारणवश ऐसी हदीसों को इमाम बुख़ारी, इमाम मुस्लिम, मौता के लेखक (इमाम मालिक) और इसी प्रकार बहुत से मुहद्दिसीन ने छोड़ दिया है और बहुत से मुहद्दिसीन ने उन पर जिरह (तर्क-वितर्क) की है। अत: वह व्यक्ति

من المحدِّثين۔ فمن زعم أن المهدى المعهود والمسيح الموعود رجلان يخرجان كالمجاهدين، ويسلان السيف على النصارى والمشركين، فقد افترى على الله ورسوله خاتم النبيين، وقال قولًا لا أصل له فى القرآن ولا فى الحديث ولا فى أقوال المحققين۔

بل الحق الثابت أنه لا مهدى إلا عيسٰى ، ولا حرب ولا يؤخذ السيف ولا القنا۔ هذا ما ثبت من نبيّنا المصطفٰى۔ وما كان حديث يفترٰى، وشهد عليه الصحيحان فى القرون الاولى، بما تركا تلك الاحاديث وإنّ فى هٰذا ثبوت لاولى النهى، وتلك شهادة عظمٰى، فانظر إن كنتَ من أهل التقىٰ۔ واعلم أن عيسى

जो यह समझता है कि महदी माहूद और मसीह मौऊद दो व्यक्ति हैं जो मुजाहिदीन की तरह निकलेंगे और ईसाइयों तथा मुश्रिकों (मूर्तिपूजकों) पर तलवारें सूंत लेंगे वह अल्लाह और उसके रसूल ख़ातमुन्नबिय्यीन पर झूठा आरोप लगाता है और ऐसी बात कहता है कि जिसका क़ुरआन, हदीस और तहक़ीक़ करने वालों के कथन में कोई आधार नहीं है।

बल्कि प्रमाणित वास्तविकता यह है कि "ईसा के अतिरिक्त कोई महदी नहीं" और न ही कोई जंग है और न ही तलवार उठाई जाएगी और न भाले। यही हमारे नबी मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से सिद्ध है कोई मनगढ़त बात नहीं। अत: प्रथम सदियों में बुख़ारी व मुस्लिम ने ऐसी हदीसों को त्याग कर इस बात की गवाही दी है और बुद्धिमानों के लिए इस में एक दलील है यह एक बहुत बड़ी गवाही है। अत: यदि तू संयमी लोगों में से है तो इस बात पर विचार कर और जान ले कि अल्लाह के नबी ईसा अलैहिस्सलाम मृत्यु को प्राप्त हो चुके हैं और उन रसूलों से जा मिले जो गुज़र चुके और इस संसार को त्याग चुके हैं। इस बात की गवाही

المسيح نبى الله قد مات ولحق برسُلٍ خلوا وتركوا هذه الدنيا، وقد شهد عليه ربنا فى كتابه الاجلى، وإن شئتَ فاقرأْ فَلَمَّا تَوَفَّيْتَنى، ولا تتبعْ قول الذين تركوا القرآن بالهوىٰ۔ وما أتوا عليه ببرهان أقوىٰ، وقالوا وجدنا عليه آباء نا ولو كان آباؤهم بعُدوا من الهدىٰ۔ وإنّا نريكم آيات الله فكيف تكفرون۔ هٰذا ما قال الله، فبأى حديث بعد كلام الله تؤمنون؟ أتتركون القرآن بأقوالٍ لا تعرفون؟ أتجعلون رزقكم أنكم تُكذّبون۔ وتؤثرون الشك على اليقين۔ولا قول كقول رب العالمين۔

وإنّـا أثبتنـا أن عيسٰـى عليـه السّـلام هاجـر مـن

हमारे रब्ब ने अपनी प्रकाशमय पुस्तक (अर्थात क़ुरआन) में दे दी है। यदि तू चाहे (फलम्मा तवफ्फयतनी अर्थात और जब तूने मुझे मृत्यु दे दी) को पढ़ सकता है। और उन लोगों का अनुसरण न कर जिन्होंने क़ुरआन को अपनी इच्छाओं के कारण छोड़ दिया और उस पर कोई सुदृढ़ तर्क न ला सके और कहा कि हमने अपने बाप दादों को इसी पर पाया है। चाहे उनके बाप दादा हिदायत (अर्थात सन्मार्ग) से दूर ही क्यों न हो चुके हों। अत: हम तुम्हें अल्लाह तआला की आयतें दिखा रहे हैं, फिर तुम किस प्रकार इन्कार करते हो? और अल्लाह तआला ने फरमाया है- अल्लाह तआला के कलाम को छोड़कर तुम किस बात पर ईमान लाओगे? क्या तुम क़ुरआन को ऐसी बातों के लिए छोड़ते हो जिनको तुम नहीं जानते? और तुम झुठलाने के द्वारा अपनी जीविका बनाते हो और सन्देह को विश्वास पर प्राथमिकता देते हो। कोई कथन अल्लाह रब्बुल आलमीन के कथन के समान नहीं।

हमने सिद्ध कर दिया है कि ईसा अलैहिस्सलाम ने सलीब की

وطنه بعد واقعة الصليب، والهجرة من سُنن المرسلين بإذن الله المجيب القريب۔ ثم سافر إلى هذه الديار، ديارِ الهند كما جاء في الآثار، وكمّل الله عمره إلى مائة وعشرين كما جاء في الحديث من النبي المختار، ثم مات ودُفن في أرض قريبة من هذهِ الإقطار، وقبره موجود في سِرِينَكَرُ الكشمير إلى هٰذا الزمان، ومشهور بين العوام والخواص والاعيان، ويُزار ويُتبرّك به، فاسأل أهلها العارفين إن كنتَ من المرتابين۔ وانظر كيف مُزّقت تلك الخيالات، ولم يبق لها أثر وبطلت تلك الروايات، فانكشف أن المراد من المسيح النازل رجلٌ

घटना के बाद अपने देश से हिजरत (प्रवास) की तथा मुजीब और क़रीब ख़ुदा के आदेश से हिजरत करना रसूलों की सुन्नत है। फिर उन्होंने इस देश अर्थात भारत की ओर यात्रा की जैसा कि प्राचीन इस्लामिक लिट्रेचर में वर्णित है। अल्लाह तआला ने उनकी आयु 120 वर्ष पूर्ण की जैसा कि मुख्तार (सामर्थ्यवान) रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की हदीस में आया है। उसके पश्चात उनका देहांत हुआ और वहीं उस देश के निकट की भूमि में दफ़न किए गए और इस समय तक उनकी क़ब्र श्रीनगर कश्मीर में मौजूद है और सामान्य एवं विशिष्ट लोगों में प्रसिद्ध है और उसके दर्शन किए जाते हैं और उससे बरकत प्राप्त की जाती है। अत: यदि तुम्हें कोई सन्देह है तो वहां के जानकारों से पूछ लो। देखो किस प्रकार उन विचारों का खंडन कर दिया गया है यहां तक कि उनका कोई निशान शेष नहीं रहा। पिछली रिवायतें झूठी हो गईं और इस प्रकार स्पष्ट हो गया कि अवतरित होने वाले मसीह से अभिप्राय ऐसा व्यक्ति है जिसे

أُعطِـىَ له خُلُـقَ المسـيح، وهـو الذى يُكلّمكـم۔

يا أولى النهى والفهم الصحيح واعلموا أن وقت الجهاد السيفى قد مضٰى، ولم يبق إلا جهاد القلم والدعاء وآيات عظمى۔ والذين يعتقدون أن الجهاد السيفى سيجب عند ظهور الإمام، فقد أخطأوا۔ وإنّا لله على زلّة الاقدام۔ وما هٰذا إلا خطأ نشأ من قلة التدبّر فى أحاديث خير الانام، ومن عدم التفريق بين الموضوعات والصحاح واتّباع الاوهام۔ والاسف كل الاسف على رجالٍ يعلمون أنّ أحاديث المهدى الغازى مجروحة غير صحيحة، ثم يعتقدون بمجيئه من غير بصيرة، ولا يقولون قولا على وجه البصيرة، ولا يبتغون نورًا من النصوص النقلية والدلائل العقلية، وكانوا عاهدوا أن يُموّنوا خطط

मसीह के शिष्टाचार दिए गए और वह यही है जो तुमसे बात कर रहा है।

हे बुद्धिमान तथा समझदार लोगो! जान लो कि तलवार के जिहाद का समय गुज़र चुका है और केवल क़लम और दुआ और महान निशानों का जिहाद शेष रह गया है। जो लोग यह आस्था रखते हैं कि इमाम के प्रकटन के समय तलवार का जिहाद अनिवार्य होगा, उन्होंने गलती की है। अत: क़दमों के फिसलने पर 'इन्ना लिल्लाहे व इन्ना इलैहि राजिऊन' ही कह सकते हैं। यह ग़लती खैरुल अनाम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की हदीसों पर चिन्तन की कमी के परिणामस्वरुप और कमज़ोर तथा सही हदीसों में अंतर न करने और भ्रमों का अनुसरण करने के कारण पैदा हुई है। ऐसे लोगों पर नितांत खेद है जो जानते हैं कि जंगजू (लड़ाकू) महदी के बारे में हदीसें मजरूह (तर्क योग्य) हैं न कि सहीह, फिर भी बिना विचार किए उसके आने की आस्था रखते हैं और अनुभव के आधार पर कोई बात नहीं करते, न ही क़ुरआनी आयतों या बौद्धिक तर्कों से कुछ समझना चाहते हैं। हालांकि उन्होंने यह वादा किया था कि इस्लाम की मुहिमों (बड़े-बड़े

الإسلام، ولا يتّبعوا قولًا يُخالف قول سيدنا خير الانام۔ فلا شك أن وجود هٰؤُلآء من إحدى مصائب التى صُبّت على الدين المتين، فإنهم لا يتّبعون نورًا بل يمشون كالعمين۔ وما كان علمهم مُطهَّرًا من الشك والريب، وما رُشحتْ على قلوبهم فيوضُمن الغيب، بل إنّهم يقْفُون ما ليس لهم به من علمٍ ولابصيرة، ويتّبع بعضهم بعضًا من غير دراية ومعرفة و كذالك جعلوا دين اللّٰه بحُمقهم عرضةَ المعترضين المتعصّبين، ولعبةَ اللاعبين الغافلين۔

إنهم قوم جهلوا معرفة الامور الدينية والدقائق الشرعية، وصاروا أئمة قوم جاهلين۔ يُفتون ولا يعلمون، ويؤُمّون ولا

कामों) में सहायता करेंगे और किसी ऐसे कथन का अनुसरण नहीं करेंगे जो हमारे आक़ा खैरुल अनाम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के कथन के विपरीत हो। अत: इसमें कोई सन्देह नहीं कि इन लोगों का अस्तित्व इस्लाम धर्म पर ढाई जाने वाली मुसीबतों में से एक मुसीबत है। ये लोग नूर (अध्यात्म प्रकाश) का अनुसरण नहीं करते बल्कि अंधों के समान चलते हैं। इनका ज्ञान सन्देह से रिक्त नहीं है और इनके दिलों पर ख़ुदा की ओर से मारिफ़त के छींटे नहीं पड़े बल्कि वे उस बात का अनुसरण कर रहे हैं जिसके बारे में उन्हें कोई ज्ञान और विवेक प्राप्त नहीं और बिना ज्ञान तथा विवेक के एक दूसरे के पीछे चलते जा रहे हैं। इसी तरह उन्होंने अपनी मूर्खता से अल्लाह के धर्म को आपत्ति करने वाले तथा पक्षपात करने वाले लोगों का निशाना और लापरवाहों तथा तमाशा देखने वालों के लिए एक खेल-कूद बना दिया है।

ये लोग ऐसी क़ौम हैं जो धार्मिक मामलों की समझ और शरीयत की बारीकियों को भूल चुके हैं और मूर्ख क़ौम के इमाम बन चुके हैं और बिना

يتفقّهون، ويقولون ولا يفعلون۔ لا يمسّون شيئًا من معارف الفرقان، ولا يتّبعون رجال هذا الميدان، ويَعِظون ولا يفهمون ما يخرج من أفواههم، وما كانوا مبصرين ولا مفكرين، ولا على اللّٰه مُقبِلين۔ وإن بِضاعة علمهم مُزْجاةٌ ناقصة، وإن قلوبهم على الدنيا مائل ة ساقطة، فكيف يفهمون معضلات الدين، وكيف يطّلعون على معارف الشرع المتين؟ فإن معارف اللّٰه لا تنكشف إلا على قلوب صافية، وأبواب الدين لا تُفتح إلا مِمٍ على اللّٰه مُقبِلةٍ، ولا تتجلّى الحقائق إلا على أفكارٍ إلى الرحمن حافدةٍ۔ ثم مع ذالك وجب على رجالٍ يتصدّون لمواطن المباحثات ويقتحمون سيول المباحثات، أن يكونوا متوغّلين

ज्ञान के फ़त्वे देते हैं। वे इमाम तो बनते हैं परंतु धर्म के विषय में चिंतन-मनन से काम नहीं लेते। केवल बातें बनाते हैं और करते कुछ नहीं, क़ुरआन करीम के अध्यात्मज्ञान को उन्होंने छुआ तक नहीं परंतु इस मैदान के विशेषज्ञों का अनुसरण नहीं करते, उपदेश तो करते हैं परंतु यह नहीं जानते कि उनके मुंह से क्या निकल रहा है। न कुछ देखते हैं न सोचते हैं न ही अल्लाह तआला की ओर उनका ध्यान है। उनके ज्ञान का सरमाया बहुत कम और तुच्छ है। उनके दिल संसार की ओर झुके हुए बल्कि उस पर गिरे हुए हैं। अत: वे धर्म की कठिनाइयों को कैसे समझ सकते हैं और कैसे शरए मतीन (क़ुरआन करीम) के अध्यात्मज्ञानों से अवगत हो सकते हैं? अल्लाह तआला के अध्यात्मज्ञान तो केवल पवित्र हृदयों पर खुलते हैं और धर्म के द्वार केवल उन साहसी लोगों पर खुलते हैं जो अल्लाह तआला की ओर मुख करते हैं और वास्तविकताओं का प्रकटन केवल उन चिंतकों पर होता है जो रहमान ख़ुदा की ओर दौड़ते हैं। फिर जो लोग शास्त्रार्थों के मैदान में मुक़ाबला करते हैं और मुहावरों की बाढ़ में ज़ोर से प्रवेश करते हैं उन पर अनिवार्य है

فی العلوم العربية، ومُرتوين من العيون الادبية، و مطّلعين على فنون الكلام والاساليب الغريبة المعجبة، وقادرين على محاسن الكنايات، ومقتدرين على طرق التفهيمات، وعارفين لمحاورات اللسان، و ضابطين لقوانين العاصمة من الخطأ فی الفهم والغلط فی البيان وأنّى لهؤلاء هذه الكمالات؟ فليس فی أيديهم إلّا الخرافات، فليبكِ عليهم من كان من الباكين۔ أينتظرون المهدى الغازى ليسفك الدماء ، ويقتل الاعداء ، و يقطع الهامَ، وبالسيف يشيع الإسلام؟ مع أنه ليس بثابت من الاحاديث الصحيحة، ولا النصوص الفرقانية، بل ثبت على خلافه عند المحققين۔ ثم مع ذالك هذا أمر

कि अरबी भाषा के ज्ञान में माहिर हों और साहित्य के स्रोतों से तृप्त हों और वाणी की विभिन्न कलाओं तथा नए-नए और पसंदीदा तरीकों से परिचित हों, रूपकों की विशेषताओं पर समर्थ हों और दूसरों को समझाने की शक्ति रखते हों और भाषा के मुहावरों से परिचित हों। और समझने तथा बोलने में ग़लती से बचाने वाले नियमों पर पकड़ रखते हों। परन्तु ऐसे लोगों को ये विशेषताएं कैसे प्राप्त हो सकती हैं? उनके हाथ में खुराफात के अतिरिक्त कुछ नहीं। अत: रोने वालों को चाहिए कि उन पर रोएँ। क्या वे जंगजू महदी की प्रतीक्षा कर रहे हैं ताकि वह लोगों का रक्त बहाए और शत्रुओं का वध करे और सिर काटे और तलवार के द्वारा इस्लाम को फैलाए? हालांकि यह बात न सहीह हदीसों से सिद्ध है न क़ुरआन करीम की आयतों से बल्कि अनुसंधाताओं के निकट इसके विपरीत सिद्ध है। इसके अतिरिक्त सद्बुद्धि भी इस बात का इन्कार करती है और सही समझ भी इंकार करती है। अत: तू विचार करने वालों से पूछ ले। तू जानता है कि हमारा यह ज़माना ऐसा ज़माना है जिसमें कोई हम पर धर्म के लिए तलवार और भालों से आक्रमण नहीं करता, न

يُنكره العقل السليم، ويأبى الفهم المستقيم، فاسأل المتدبّرين وأنت تعلم أن زماننا هذا زمان لا يسطو أحدٌ علينا للمذهب بالسيف والسنان، ولا يُجبِر أحدٌ لنتّبع دينه ونترك دين الله خير الاديان، فلا نحتاج فى هذه الايام إلى الحرب والانتقام، ولا إلى تثقيف العوالى وتشهير الحسام، بل صارت هذه الامور كشريعةٍ نُسختْ، وطُرقٍ بُدّلت۔ فلمّا ما بقى حاجة إلى الغَزاة والمحاربة، أُقيم مقامَ هذا إتمامُ الحجّة بالدلائل الواضحة القطعية وإثبات الدعاوى بالبراهين الصادقة الصحيحة، وكذالك وُضعت موضعها الآياتالمنيرة والخوارق الكبيرة، فإن الحاجة قد اشتدّت فى وقتنا هذا إلى تقوية الإيمان، ونزول الآيات الجليّة من الرحمٰن، ولا يُفيدهم سفك الدماء وضرب

कोई हमें विवश करता है कि हम अल्लाह के धर्म को जो सब धर्मों से श्रेष्ठ है, छोड़कर उसके धर्म का अनुसरण करें। अत: इन दिनों जंग और प्रतिशोध की हमें कोई आवश्यकता नहीं। न ही भालों को तेज़ करने और तलवारें सून्तने की आवश्यकता है बल्कि यह मामले एक मन्सूख़ (रद्द) हो चुकी शरीयत की तरह हो चुके हैं और उन रास्तों की तरह हैं जो बदल दिए गए हैं। अत: जब जंगो और लड़ाइयों की आवश्यकता न रही तो उनके स्थान पर स्पष्ट और अकाट्य तर्कों से हुज्जत पूरी कर दी गई और उन दावों को सच्ची और सही दलीलों के द्वारा सिद्ध कर दिया गया। इसी प्रकार जंगो के स्थान पर स्पष्ट निशान और बड़े बड़े चमत्कार रख दिए गए। अत: हमारे इस ज़माने में ईमान को मज़बूत करने और रहमान ख़ुदा की ओर से स्पष्ट निशानों के उतरने की अत्यंत आवश्यकता है। रक्तपात और गर्दनें उड़ाना उन्हें कदापि लाभ नहीं पहुंचा सकता बल्कि यह तरीका सन्देहों तथा विरोध को और भी बढ़ाएगा। अत: सच्चा महदी जिसके आगमन की इस ज़माने में

الاعناق، بل يزيد هذا أنواع الشكوك والشقاق۔ فالمهدى الصدوق الذى اشتدّت ضرورته لهذا الزمان، ليس برجل يتقلّد الاسلحة و يعلم فنون الحرب واستعمال السيف والسنان، بل الحق أن هذه العادات تضر الدين فى هذه الاوقات، ويختلج فى صدور الناس من أنواع الشكوك والوسواس، ويزعمون أن المسلمين قوم ليس عندهم إلا السيف والتخويف بالسنان، ولا يعلمون إلّا قتل الإنسان.

فالإمام الذى تطلبه فى هذا الزمان قلوبُ الطالبين، وتستقريه النفوس كالجائعين، رجلٌ صالح مهذّب بالاخلاق الفاضلة، ومُتّصفٌ بالصفات الجليلة المرضية، ثم مع ذالك كان من الذين أُوتوا الحكمة والمعرفة، ورُزقوا البراهين

अत्यंत आवश्यकता है वह ऐसा व्यक्ति नहीं जो स्वयं हथियारों से लैस हो और युद्ध की कलाओं तथा तलवार और भाले का प्रयोग सिखाए बल्कि वास्तविकता यह है कि इस समय ऐसे काम धर्म को हानि पहुंचाते हैं और लोगों के दिलों में विभिन्न प्रकार के सन्देह और भ्रम उत्पन्न करते हैं और वे समझते हैं कि मुसलमानों के पास तलवार और भालों के द्वारा डराने के अतिरिक्त कुछ नहीं और ये लोगों को केवल क़त्ल करना जानते हैं।

अभिलाषियों के दिल इस ज़माने में जिस इमाम की प्रतीक्षा कर रहे हैं और भूखों के समान उसको तलाश कर रहे हैं वह एक नेक और उच्चतम शिष्टाचार से युक्त व्यक्ति होगा, महान और पसंदीदा विशेषताओं से युक्त होगा और उसके साथ-साथ उन लोगों में से होगा जिनको हिकमत और अध्यात्मज्ञान और अकाट्य तर्क और दलीलें दी जाती हैं। और वह ख़ुदाई ज्ञान तथा शरीयत के गूढ़ रहस्यों और शरीयत के कठिन विषयों को समझने में अपने समय के विद्वानों में सबसे बढ़ जाएगा और ऐसी वाणी

والادلّة القاطعة، وفاق الكلَّ فى العلوم الإلهية، وسبق الاقران فى دقائق النواميس ومعضلات الشرعية، وكان يقدِر على كلام يؤثّر فى قلوب الجُلّاس، ويتفوّه بكلم يستملحها الخواص وعامة الناس، وكان مقتضبا بملفوظات تحكى لآلئَ منضّدة، ومُرتجلًا بنِكاتٍ تُضاهى قطوفًا مذلَّلة، مارنًا على حسن الجواب، وفصل الخطاب، مستمكنًا من قولٍ هو أقرب بالاذهان، وأدخلُ فى الجنان، مُبكِّتًا للمخالفين فى كل مَوردٍ توردَه، ومُسكِّتًا للمنكرين فى كل كلام أوردَه۔ فلا سيفَ فى هذا الزمان إلّا سيف قوة البيان، ولا أجد فى هذا العصر تأثير القناة، إلّا فى البراهين والادلّة والآيات۔ فإمام

पर समर्थ होगा जो उसके सभासदों के दिलों पर असर करेगी। ऐसे शब्दों में बात करेगा जिसको हर स्तर के लोग पसंद करेंगे। वह ऐसा मौखिक भाषण करेगा जो परस्पर लड़ी में पिरोए हुए मोतियों के समान होगा और बिना रुके ऐसे गूढ़ रहस्यों को वर्णन करेगा जो झुकाए हुए गुच्छों के समान होंगे, सर्वश्रेष्ठ उत्तर तथा निर्णायक बात करने का हुनर रखता होगा और ऐसी बात करने पर समर्थ होगा जो बुद्धि संगत और दिलों में आसानी से उतरने वाली होगी और हर मैदान में विरोधियों का मुंह बंद करने वाला और अपनी हर बात से विरोधियों को निरुत्तर करने वाला होगा। अत: इस ज़माने में वाक् शक्ति की तलवार के अतिरिक्त कोई तलवार नहीं। मैं इस ज़माने में भालों जैसा प्रभाव सिवाए दलीलों और तर्कों और चमत्कारों के किसी चीज़ में नहीं पाता। अत: इस ज़माने का इमाम वह व्यक्ति है जो कि विवेक के मैदान का शहसवार है और अल्लाह तआला की ओर से चमत्कारों और हुज्जत पूरी करने के अन्य उपायों तथा विभिन्न तर्कों

هذا العصر امرؤ كان فارس مضمار العرفان، والمؤيَّد من الله بآيٍ وغيرها من طرق إتمام الحجّة وأنواع البرهان۔ و كان أعرفَ مِن غيره بكتاب الله الفرقان، ليُرهِب به أعدائَ الله ويشفى صدور الطالبين۔ و كان قادرًا على إصلاح نفسه التى هى أعدى أعدائه لتذ ّوب بالكلّية ولا تنازع الله فى كبريائه۔ و كان متوكّلًا متواضعا مُبتهلا لإعلاء الشريعة الغراء صابرًا، مُشفقًا على عباد الله ومجتهدًا لهم بعَقْد الهمّة والالحاح فى الدعاء ۔ ولا ينسى أحدًا من المخلصين ولو كانوا فى أبعد أقاليم، ويُجادل الله فى أشقياء جماعته كإبراهيم، و كان وجيهًا فى حضرة رب العالمين۔ فإن

द्वारा सहायता प्राप्त है। वह अल्लाह की किताब क़ुरआन करीम का दूसरे लोगों से अधिक ज्ञान रखता है ताकि उसके द्वारा अल्लाह के शत्रुओं पर उसका रोब हावी हो सके और इच्छुकों के दिलों को स्वास्थ्य प्रदान कर सके। वह अपने नफ़्स, जो उसका घोर शत्रु है, के सुधार पर समर्थ होगा ताकि उसका नफ़्स पूर्णत: पिघल जाए और अल्लाह की बुलंद शान में भागीदार होने का विचार तक न ला सके। वह भरोसा करने वाला, अत्यंत विनम्र और प्रकाशमान शरीयत की सरबुलंदी के लिए दुआएं करने वाला, धैर्य रखने वाला और अल्लाह के बंदों से प्रेम का व्यवहार करने वाला, दृढ़ संकल्प तथा दुआओं में दर्द के साथ उनके लिए प्रयत्न करने वाला होगा और श्रद्धावानों में से किसी को भी भूलेगा नहीं चाहे वे कितने ही दूर के इलाकों में रहने वाले हों और अपनी जमाअत में से दुष्टों के बारे में इब्राहीम के समान अल्लाह तआला से बहस करेगा और रब्बुल आलमीन के समक्ष प्रतिष्ठित होगा। इमाम अर्थात मार्गदर्शक का उदाहरण

مَثل الإمام مثلُ رجلٍ قويٍ تعلّق بأهدابه ضعيفٌ أو شيخٌ كبيرٌ يتخاذلان رجلاه، و ضعفتْ عيناه، فيأخذ هذا الفتى الضعيف۔ والشيخ الفانى الخرف النحيف، ويعصمه من أن يظلم نفسه ويحيف، و كذالك يأخذ كلَّ من خِيفَ عليه العثارلضعفٍ من المريرة، ويُعطى غضًّاطريًّا كلَّ من احتاج إلى امتراء الميرة، ويُبلّغ المستضعَفين اللاغبين إلى ديارهم كفتيان ناصرين۔ فالذى ما أُوتِىَ قلبُه صفةَ الشفقة والمواساة، وما له قوة وشجاعة كالابطال والكُماة، ولا يُقبِل على اللّٰه لخَلْقه بالبكاء والتضرّعات، ولا يوجد فيه رُحْمٌ أكثر من رحم الوالدات، فلا يُؤتى له

उस शक्तिशाली व्यक्ति के समान है जिसके शरीर को अगर कोई ऐसा व्यक्ति पकड़ ले जो निर्बल या बड़ी आयु का बूढ़ा हो, जिसकी दोनों टांगे लड़खड़ा रही हों और दोनों आंखें कमज़ोर हो चुकी हों तो यह नौजवान उस अत्यंत बूढ़े, कमज़ोर और हतसंज्ञ व्यक्ति को इस प्रकार थाम लेगा कि उसे अपने ऊपर अत्याचार करने से बचा लेगा। इसी प्रकार प्रत्येक उस व्यक्ति को भी थाम लेगा कि जिसके इरादे की कमज़ोरी के कारण उसके ठोकर खाने का डर हो। वह जीवन हेतु आवश्यक सामग्री के मोहताज हर व्यक्ति को ताज़ा-ताज़ा फल देता है और कमज़ोरों तथा भूखों की सहायता करने वाले नौजवानों के समान उनके देशों तक पहुंचाता है। परन्तु वह व्यक्ति जिसके दिल को प्रेम और हमदर्दी का गुण नहीं दिया गया और बहादुरों तथा दिलेरों के समान शक्ति और बहादुरी नहीं दी गई और वह मानवजाति के लिए अल्लाह तआला की ओर रोते और गिड़गिड़ाते हुए ध्यान नहीं करता और उसमें माँओं से अधिक दया नहीं पाई जाती, उसको

هذا المنصب ولا يوجد فيه شيء من هذه الآيات، وليس هو وارث إمام الكونين وسيد الكائنات۔ وأمّا الذى أُعطِىَ له هذا التحنّن والشفقة، ومُلأ قلبُه بهذه الصفات، مع انسلاخه من أهواء النفس والشهوات، واستهلاكه فى حب الله ومَحْوِيّتِه فى ابتغاء وجه الله والمرضاة، فهو كبريتأحمرُوبدرٌ تام ودوحةٌ مباركةٌ للكائنات، ليتفيّأ الناس ظلالهويأتوه لجلب البركات۔ وهو دار أمنٍ ليجوس المضطرّون خلالها۔ وليأخذوه كهفًا عند الآفات۔وهو مُباركٌ وبورِكَ مَن حوله وبُشرى لمن لاقاه ورآه، أو سمع منه بعض الكلمات۔ إنه رجلٌ يوالى اللّٰهُ من والاه، ويُعادى

यह मर्तबा नहीं दिया जाता। न ही उसमें इन निशानों में से कुछ पाया जाता है, न ही ऐसा व्यक्ति दोनों लोकों के इमाम और ब्रह्मांड के सरदार (अर्थात हज़रत मुहम्मद स०) का वारिस होता है। हाँ जिस व्यक्ति को ऐसी मोहब्बत और प्रेम मिला हो और उसका दिल इन विशेषताओं से भर दिया गया हो और वह तामसिक इच्छाओं तथा कामवासनाओं से बाहर निकल आया हो और अल्लाह तआला की मोहब्बत में फ़ना हो गया हो और अल्लाह की प्रशंसा तथा खुशी प्राप्त करने के लिए उसकी मोहब्बत में खो गया हो, वह इस ब्रह्मांड के लिए एक श्रेष्ठतम व्यक्ति और चौदहवीं का चांद और लाभदायक वृक्ष के समान है। ताकि लोग उसकी छाया से लाभ उठाएं और उसके पास बरकतें प्राप्त करने के लिए आएं। वह अमन का घर होता है ताकि मजबूर लोग उसमें शरण ले सकें और आपदाओं के समय उसे पनाहगाह बना सकें। वह स्वयं मुबारक होता है और जो उसके इर्द-गिर्द होता है उसे भी बरकत दी जाती है। अत: उसको खुशख़बरी हो जो उससे

من عاداه۔ ويأتيه السعداء مِن كل فَجٍّ عميق وديارٍ بعيدة، وهوكهفٌ للمِلّة و أمانٌ من الله لكل مسلم ومسلمة۔ ومن علامات صدقه أنه يؤذَى فى أوّلامره ويُسلَّطُ عليه الاشرار، ويسطو الفُجّارُ، مستهزئين مُكذّبين، ويقولون فيه أشياء ويسبّون مجترئين۔ وهو يدِجّ على الارض دَجَّ الصِّوار، ويمشى هونًا كالاخيار، ولا يجزى السيئةَ بالسيئة، ويدفع بالتى هى أحسن وأنسب لعباد الحضرة حتّى اذا تمّ أيّام الابتلاء، وما قُدّر عليه مِن جور السفهاء ، فيُنفَخ فى روعه أن يُقبِل على الله كل الإقبال، ويسئل نصرته بالتضرّع والابتهال، فتتحرك فى باطنه هذه الإرادات،

मिला और उसे देखा और कुछ बातें उससे सुनी। यह ऐसा व्यक्ति होता है कि जो उससे दोस्ती करता है अल्लाह उसे अपना दोस्त बना लेता है और जो उससे शत्रुता करता है अल्लाह उसका शत्रु हो जाता है। भाग्यशाली लोग कठिन मार्गों और दूर के इलाकों से उसके पास आते हैं। वह उम्मत के लिए पनाहगाह होता है और अल्लाह तआला की ओर से प्रत्येक मुस्लिम पुरुष तथा स्त्री के लिए सुरक्षा कवच बन जाता है। उसकी सच्चाई की निशानियों में से यह है कि आरंभ में उसको कष्ट दिए जाते हैं, दुष्ट लोग उस पर हावी किए जाते हैं और दुराचारी उसको झुठलाते और मज़ाक उड़ाते हुए उस पर चढ़ाई करते हैं और उसके बारे में तरह-तरह की बातें करते हैं और बेबाकी से गालियां देते हैं। वह धरजती पर कस्तूरी (की सुगंध) के समान और नेक लोगों के समान धीरता पूर्वक चलता है। बुराई का बदला बुराई से नहीं देता बल्कि बुराई को अच्छाई के द्वारा इस प्रकार दूर करता है कि जो अल्लाह के बंदों के लिए सबसे अधिक युक्तिसंगत होता है। यहां तक कि अगर कोई

فيخرّ ساجدًا لله فتُستجاب الدعواتُ، وتكون له النصرة والفتح فى آخر الامر وفى المآل۔ ويخلق الله له أسبابًا من السماء باللطف والنوال، ويفعل له أفعالًا يتحيّر الخَلْق من تلك الافعال، ويقلِّب الامرَ كل التقليب ويؤمنه من الخوف والاهتيال۔ وكذالك جرت عادتُه بأوليائه، فإنه يجعل أعداء هم غالبين فى أوّل الامر، ثم يجعل الخواتيم لهم، وقد كتب أن العاقبة للمتقين۔ ولا يُبعَث كمثل هذه الرجال إلّا بعد مرورٍ من القرون بإذن الله الفعّال، وبعد فسادٍ فى الارض وصَول الاعداء وسيل الضلال۔ فإذا ظهر الفساد فى الارض وزاد العدوان، وكثر الفسق والعصيان،

आज़माइश के दिन आएँ और मूर्खों का अत्याचार उसके लिए मुक़द्दर हो जाए तो उसके दिल में डाला जाता है कि वह अल्लाह तआला की ओर पूर्णत: ध्यान लगाए और दर्द भरी दुआओं और गिड़गिड़ाहट के साथ अल्लाह तआला से उसकी सहायता मांगे। तो ये इरादे उसके दिल में घर कर जाते हैं और वह अल्लाह के सामने सज्द: में गिर जाता है तब उसकी दुआएं स्वीकार की जाती हैं। अंतत: उसे सहायता और विजय मिलती है और अल्लाह तआला अपनी कृपा से उसके लिए आसमान से समाधान पैदा करता है और उसके लिए ऐसे काम करता है कि सृष्टि उन कामों से हैरान हो जाती है। अल्लाह तआला परिस्थिति को पूरी तरह पलट देता है और उसे भय से अमन प्रदान करता है। अल्लाह तआला का अपने वलियों के साथ यही तरीका रहा है। अत: आरंभ में वह वलियों के शत्रुओं को विजयी कर देता है परंतु अंतत: परिणाम अल्लाह के वलियों के हक़ में होता है। अल्लाह तआला ने यह अनिवार्य कर रखा है कि परिणाम संयमियों के हक़ में होता है। ऐसे लोग ख़ुदा-ए-कारसाज़ (अर्थात

وقلَّ المعرفة وصار الناس كالعمين، وجهلوا حدود الله رب العالمين، وتطرّقَ الفساد إلى الاعمال والافعال والاقوال، وصار أمر الدين مُتشتِّتًا ومُشرِفًا على الزوال، والاعداء مدّوا أيديهم إلى بيضة الإسلام، وانتهى شعار الدين إلى الانعدام، وما بقى فى وُسع العلماء. أن يردّوا الناس إلى الصلاح والاتّقاء، بل العلماء وهنوا ونسوا خدمة الدين، وتمايلوا على الدنيا الدنيّة، وما بقى لهم حظ من الإيمان واليقين. و بلغ أمر الفساد والفسق والضلالة۔ إلى منتهى الغىّ كعلّةٍ كانت فى الدرجة الثالثة، وما بقى رجاء أن يبرأ الناس بمجرّ القال والقيل، فعند ذالك يُرسَلُ مصلحٌ

बिगड़े काम बनाने वाले ख़ुदा) के आदेश से शताब्दियों के बाद, धरती में उपद्रव पैदा होने, शत्रुओं के आक्रमणों तथा गुमराही के फैल जाने के पश्चात अवतरित होते हैं। अत: जब धरती में बिगाड़ प्रकट हो जाता है, शत्रु बढ़ जाते हैं, बुराई तथा अवज्ञा की अधिकता हो जाती है, अध्यात्मज्ञान कम हो जाता है, लोग अंधों के समान हो जाते हैं, अल्लाह रब्बुल आलमीन की शिक्षाओं को भूल जाते हैं, कथनी तथा करनी में दोष पैदा हो जाता है, धर्म का मामला बिखर जाता है और अंत के समीप पहुंच जाता है, शत्रु मुसलमानों की ओर अपने हाथ बढ़ाते हैं और धार्मिक चाल-चलन समाप्त होने लगते हैं और उलमा के बस में नहीं रहता कि वे लोगों को सुधार तथा संयम की ओर लौटा सकें बल्कि उलमा कमज़ोर हो जाते हैं और धर्म की सेवा को भूल जाते हैं और तुच्छ संसार की ओर झुक जाते हैं, ईमान और विश्वास का कोई हिस्सा उनमें नहीं रह जाता और उपद्रव, बुराई और गुमराही चरम सीमा तक पहुंच जाती है, मानो कोई बीमारी तृतीय श्रेणी तक पहुंच चुकी होती है और इस बात की कोई

ويُعطَى له مِن لدن ربه علمٌ ومعرفة وصدق وطرقُ إقامة الدليل، وطهارةٌ واستقامةٌ، و عليه جرت عادة الرب الجليل.

فالحاصل أن العناية الإلهية تقتضى بالفضل والإحسان، أن يبعث نبيًّا أو مُحدَّثًا فى ذالك الزمان، ويفوّض إليه هذه الخطة ويجتبيه لإصلاح نوع الإنسان، فيجىء فى وقت تشهد فيه القلوب السليمة لضرورة داعٍ من حضرة الكبرياء. وتحسّ كلُّ نفس متيقّظة حاجةً إلى تائيد رب السماء، ويجدون ريحه، ونفخا تُه تقرَع شامّة أرواحهم، فعند ذالك يظهر مأمور الله، ويغيض سيل الفتن، ويتم الحجة على الكافرين.ولا يأتى

उम्मीद नहीं रहती कि लोग केवल बातों के द्वारा स्वस्थ हो जाएंगे। ऐसे समय में सुधारक भेजा जाता है और उसे उसके रब की ओर से ज्ञान और विवेक और सच्चाई और हुज्जत पूरी करने के तरीके प्रदान किए जाते हैं, पवित्रता और दृढ़ता प्रदान की जाती है। यही रब्बे जलील (प्रतापवान ख़ुदा) की सुन्नत रही है।

सारांश यह है कि अल्लाह तआला की रहमत, उसकी कृपा और उपकार यह मांग करते हैं कि कोई नबी या मुहद्दिस इस ज़माने में भेजा जाए और यह काम उसके सुपुर्द किया जाए और उसे अल्लाह तआला लोगों के सुधार के लिए चुन ले। अत: वह ऐसे समय में आता है जबकि सीधे और साफ दिल अल्लाह तआला की ओर से किसी सुधारक की आवश्यकता की गवाही देते हैं। प्रत्येक सचेत व्यक्ति आसमान के रब की ओर से समर्थन की आवश्यकता को अनुभव करता है बल्कि उनकी रूहों की सूंघने की शक्ति उसकी सुगंध को अनुभव करती है। ऐसे समय में अल्लाह तआला का नबी प्रकट होता है और फ़ित्नों की बाढ़ को

الّاعند الضرورات، ولا يسلّ السيف إلا على الذينسلوها من الظالمين والعصاة.

ثم اعلم أيها السعيد أن أكثر الناس قد أخطوا وغلطوا فى أمر المهدى المعهود ونسبوا إليه سفك الدماء وقتلَ كثيرٍ من النصارٰى واليهود، وقالوا إن ملوك النصار يالذين هم ملوك الهند من أهل المغرب أعنى اليوروفين، يؤخَذون و يُطوَّقون ثم يُحضَرون فى حضرة المهدى صاغرين۔ وما لهم به من علم أن يقولوا إلّا كالمفترين۔ وما عندهم إلّا أحاديث ضعيفة ووضع من الواضعين، ولا تجد فى أيديهم حديثًا صحيحًا من خاتم النبيين۔ فاتّقوا الله ولا تعتقدوا كمثل هذه العقائد، ولا

सुखा देता है और काफिरों पर हुज्जत पूरी करता है। वह आवश्यकता के बिना नहीं आता और न तलवार सूंतता है, सिवाए उन अत्याचारियों और अवज्ञाकारियों पर जो पहले तलवार सूंतते हैं।

फिर एक सौभाग्यशाली यह भी जान ले कि महदी माहूद के बारे में अक्सर लोगों ने ग़लती खाई है और उसकी ओर खून बहाना और बहुत से ईसाइयों और यहूदियों को क़त्ल करना संबद्ध किया है। वे कहते हैं कि ईसाई बादशाह जो पश्चिमी देशों अर्थात यूरोपियन लोगों में से हिंदुस्तान के बादशाह हैं उन्हें पकड़ा जाएगा और गले में बेड़ियां पहनाई जाएंगी, फिर उन्हें अपमानित अवस्था में महदी के सामने प्रस्तुत किया जाएगा। जबकि उनको इस विषय में कोई ज्ञान नहीं है और वे केवल झूठ गढ़ने वालों के समान बातें कर रहे हैं। उनके पास कमज़ोर और लोगों की बनाई हुई हदीसों के अतिरिक्त कुछ नहीं। तू उनके हाथ में हज़रत ख़ातमुन्नबिय्यीन की कोई सहीह हदीस नहीं पाएगा। अत: अल्लाह का

تستروا شريعة الله تحت الزوائد متعمّدين۔ والذين لا يتركون هذه الاقاويل، ولا يستقرون البرهان والدليل، ولا يطلبون نورا يشفى النفس وينفى اللبس، ويكشف عن حقيقة الغُمّى، ويُوَضّح المعمَّى، ولا يُمعِنون النظر كالمحققين، بل يتّبع بعضهم بعضًا كالعمين، ولا يسرحون الطرف كالمفتّشين، فأولئك قوم يشابهون جَهامًا وخُلّبًا، ويُضاهون متصلّفًا قُلَّبًا، أو هم كبيوت عورة، أو كأشجارٍ غير مثمرة، ليس عندهم مِن غير لحى طُوّلتْ، وآنُفٍ شمَختْ، ووجوه عبست، وألسُنٍ سلطت، وقلوب زاغت. ولهم أمانى لا يتركونها، وأهواء يخفونها، فلا يرِدون مناهل التحقيق، ولا يستقرؤون مجاهل التدقيق، ولا

संयम धारण करो और ऐसी आस्थाएं न रखो और अल्लाह की शरीयत को जानबूझ कर अधिक बातों के नीचे न छुपाओ। जो लोग इन झूठी बातों को नहीं छोड़ते और तर्क तथा दलील का इक़रार नहीं करते और ऐसे नूर के इच्छुक नहीं होते जो दिलों को स्वस्थ करता है और सन्देह को दूर करता है और वास्तविकता से पर्दा उठाता और अंधेपन को दूर करता है। ये लोग तहक़ीक़ करने वालों के समान ध्यानपूर्वक नहीं देखते हैं बल्कि एक दूसरे का अंधों के समान अनुसरण करते चले जाते हैं और तलाश करने वालों के समान नज़र नहीं दौड़ाते। ये वे लोग हैं जो बादल, बिजली और अशिष्ट तथा दोगली प्रवृत्ति के लोगों के समान हो गए हैं या असुरक्षित घरों के समान या फल न देने वाले वृक्षों के समान हैं। उनके पास लंबी दाढ़ियों, ऊंची नाकों, बिगड़े हुए चेहरों, लंबी ज़बानों और टेड़े दिलों के सिवा कुछ नहीं। उनकी झूठी इच्छाएं हैं जिनको वे छोड़ते नहीं और ऐसी उमंगे हैं जिन्हें छुपा रहे हैं। जांच-पड़ताल के स्रोतों तक

يبذلون جهدهم لرؤية الحق المبين، ولا يجاهدون لإيصال الناس إلى ذُرَى اليقين۔

وآخر الكلام فى هذا الباب، أنى أنا المسيح المهدىّ من رب الارباب، وما جئت للمحاربات ربّ اكرم وأرحم، ولا أرى حاجة إلى سلّ السيوف من أجفانها، بل هى عارٌ لِمِلَّةٍ أحاطت البلاد بلمعانها۔ نعم! حاجةٌ إلى بَرْيِ الاقلام لجولانها، لننجّى الناس من الضلالات وطوفانها۔ وإذا جئتُ علماء هذه الديار، فكفّروني و كذّبوني بالإصرار، وأعرضوا عن الحق بالاستكبار، وقالوا دجّال افترى۔ فأراهم الله الآية الكبرى، وظهرت انباء الغيب وبركات

नहीं जाते और छानबीन योग्य मामलों को पढ़ना नहीं चाहते, खुली खुली सच्चाई को देखने की कोशिश नहीं करते और लोगों को विश्वास के स्तर तक पहुंचाने के लिए प्रयत्न नहीं करते।

इस अध्याय में अंतिम बात यह है कि मैं प्रतिपालकों के प्रतिपालक की ओर से महदी मसीह हूँ, जंग करने नहीं आया, न ही मेरे रब ने मुझे जंगो का आदेश दिया है। मैं इब्ने मरियम के आचरण पर आया हूं ताकि लोगों को उच्चतम शिष्टाचार और सर्वाधिक कृपालु और दयालु रब की ओर बुलाऊँ। मैं तलवार को उनकी म्यानों में से निकाल कर सूंतने की कोई आवश्यकता नहीं समझता। बल्कि ऐसा करना उस धर्म के लिए लज्जा का कारण है जिसने अपनी चमक से देशों को परिधि में लिया हुआ है। हां क़लमों को उनकी तेज़ी के लिए ठीक करने की आवश्यकता है। ताकि हम लोगों को गुमराही और उसके तूफ़ान से मुक्ति दिला सकें। जब मैं इस देश के उलमा के पास आया तो उन्होंने हठ पूर्वक मेरा इन्कार किया और झुठलाया और

عظمٰى، وخُسف القمر والشمس فى رمضان، فما تقلَّب قلبٌ إلى الحق وما لان، وعرضتُ عليهم سُبلَ الهداية، فما امتنعوا من العماية والغواية، وألّفتُ لهم مجلدات ضخيمة وكتبًا مطولة مبسوطة۔ فما قبلوا الحق بل سبوا كالسفهاء، وزادوا فى الغىّ والاعتداء۔وقد وضح لهم بصدق العلامات انّنى من الله رب السماوات، فما كان أمرهم إلا الفحش والإيذاء والشتم والازدراء، وقد رأوا من ربى آيات وأنواع تأييدات، فما قبلوا ظُلمًا وعُلُوًّا وما كانوا منتهين۔ وما جئتُهم فى غير وقت بل جئتُ عند غُربة الإسلام، وفى زمان فسادٍ أشار إليه سيدنا

अहंकार पूर्वक सत्य से मुंह फेर लिया। उन्होंने कहा कि (यह) एक दज्जाल है जो झूठ गढ़ रहा है। अत: अल्लाह तआला ने उनको बहुत बड़ा निशान दिखाया। परोक्ष की ख़बरें और महान बरकतें प्रकट हो गईं और रमज़ान के महीने में चांद और सूर्य को ग्रहण लगा परंतु उनका दिल न सत्य की ओर पलटा और न नर्म हुआ। मैंने उनके सामने हिदायत के मार्ग बताए परंतु वे अंधेपन और गुमराही से बाज़ न आए। मैंने उनकी खातिर बड़े-बड़े लेख लिखे और विस्तार पूर्वक पुस्तकें लिखीं परंतु उन्होंने सत्य को स्वीकार न किया बल्कि मूर्खों के समान गालियां दीं और गुमराही और अत्याचार में बढ़ गए। उनके लिए सच्चाई की निशानियां विस्तार के साथ वर्णन की गईं कि मैं अल्लाह की ओर से हूं जो आसमानों का रब है परंतु उन्होंने बुरा-भला कहने, कष्ट पहुंचाने, गालियां देने और नफ़रत के सिवा कुछ न किया। उन्होंने मेरे रब की ओर से चमत्कार और विभिन्न प्रकार के समर्थन देखे परंतु अत्याचार और अहंकार का मार्ग अपनाते हुए स्वीकार न किया और

خير الانام، وعلى رأس المائة، و كانوا من قبل ينتظرون وقت هذه المائة، و يحسبونها مباركة للملّة، فلما جئتهم نبذوا علومهم وراء ظهورهم، وصاروا أوّل المعادين ولولا خوف سيف الدولة البرطانية، لقتلوني بالسيوف والاسنّة، ولكن الله منعهم بتوسّط هذه الدولة المحسنة فنشكر الله ونشكر هذه الدولة التى جعلها الله سببًا لنجاتنا من أيدى الظالمين. إنها حفظت أعراضنا ونفوسنا وأموالنا من الناهبين. و كيف لا نُشكَر و إنّا نعيش تحت هذه السلطنة بالامن وفراغ البال، ونُجّينا من أنواع النكال،

वे सुधरने वाले न थे। मैं उनके पास असमय नहीं आया बल्कि इस्लाम की कमज़ोरी के समय और बिगाड़ के ज़माने में आया हूं जिसकी ओर हमारे आक़ा खैरुल अनाम ने संकेत किया था। और शताब्दी के आरंभ में आया हूं। इससे पहले वे इस शताब्दी की प्रतीक्षा किया करते थे और उसको धर्म के लिए मुबारक समझते थे। फिर जब मैं उनके पास आया तो उन्होंने अपने ज्ञान को पीठ पीछे फेंक दिया और सबसे पहले शत्रु बन गए। अगर अंग्रेज़ी सरकार की तलवार का भय न होता तो अवश्य वे मुझे तलवारों और भालों से क़त्ल कर देते। लेकिन अल्लाह ने इस उपकारी सरकार के द्वारा उनको रोक दिया। हम अल्लाह तआला और इस सरकार का धन्यवाद करते हैं जिसे अल्लाह तआला ने अत्याचारियों के हाथों से हमारी मुक्ति का कारण बना दिया। इस सरकार ने हमारे सम्मानों और प्राणों और मालों को लुटेरों से सुरक्षित कर दिया, फिर कैसे इसका धन्यवाद न किया जाए जबकि हम इस सरकार के अधीन अमन और सुरक्षा का जीवन व्यतीत कर रहे हैं और हमें विभिन्न प्रकार के कष्टों से मुक्ति दिलाई गई है। और इसका आना हमारे

وصار نزولها لنا نزول العزّ والبركة۔ ونلنا غاية رجائنا من امن الدنيا والعافية فوجبتإطاعتها و دعاء إقبالها وسلامتها بصدق النيّة۔ إنها ما أسَرَّتْنا بأيدى السطوة، بل جعلت قلوبنا أسارى بأيادى المنّة والنعمة، فوجب شكرها وشكر مَبرَّتِها، ووجب طاعتها وطاعة حفدتها۔ اللّٰهم اجزِ منّا هذه الملكة المعظّمة، واحفظها بدولتها وعزّتها، يا أرحم الراحمين۔ آمين۔

الراقم المرزا غلام احمد القادیانی

۲۱/ فروری ۱۸۹۹ء

लिए सम्मान और बरकत के आने के समान है। हमने दुनिया में अमन और सुरक्षा की दृष्टि से अपनी उम्मीदों की चरम सीमा को पा लिया है। अत: हम पर उसका आज्ञापालन तथा उसकी उन्नति और सलामती के लिए सच्चे दिल से दुआ करना अनिवार्य हो गया है। उसने हमें अपनी शक्ति के बल पर क़ैद नहीं किया बल्कि हमारे दिलों को उपकार और नेमत के द्वारा क़ैदी बनाया है। अत: उसका और उसके उपकार का धन्यवाद करना आवश्यक है। साथ ही उसका तथा उसके अधिकारियों का आज्ञापालन करना भी अनिवार्य है। हे हमारे ख़ुदा! इस आदरणीय महारानी को हमारी ओर से प्रतिफल प्रदान कर और उसकी तथा उसके देश और उसके सम्मान की सुरक्षा कर। आमीन या अरहमुर्राहिमीन (हे सबसे अधिक दया करने वाले ख़ुदा! स्वीकार कर)

लेखक मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी,

21 फरवरी 1899 ई०